लखनऊ
मंगलवार, 25 अगस्त , 2026
वर्ष : 12 | अंकः 1
मूल्य : 1 रुपये
पृष्ठ : 8
UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

विश्वास वह शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में रोशनी लाई जा सकती है।

TODAY WEATHER

DAY 32° Hi
NIGHT 28° Low

संक्षेप

सिंहेश्वर धाम में सावन की चौथी सोमवारी पर मची भगदड़, दर्जन भर श्रद्धालु और कई पुलिसकर्मी घायल

मधेपुरा। सावन महीने की चौथी सोमवारी पर शिवभक्तों की भारी भीड़ के बीच मधेपुरा के प्रसिद्ध बाबा सिंहेश्वर धाम में एक दर्दनाक हादसा हो गया। भगवान भोलेनाथ के दर्शन और जलाभिषेक की आतुरता में अचानक ऐसी अफरातफरी मची कि मंदिर परिसर में भगदड़ जैसे हालात पैदा हो गए। इस भीषण हादसे में जहां एक दर्जन से अधिक श्रद्धालु घायल हुए हैं, वहीं भीड़ को नियंत्रित करने की कोशिश में कई पुलिसकर्मी भी चोटिल हो गए। आनन-फानन में सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां एक श्रद्धालु की हालत बेहद गंभीर बनी हुई है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, बाबा सिंहेश्वरनाथ मंदिर में आधी रात करीब साढ़े बारह बजे सरकारी पूजा-अर्चना संपन्न हुई। इसके बाद रात एक बजे शिवभक्तों के दर्शन के लिए मंदिर के पट खोल दिए गए। शुरुआत में लोगों को बाहरी परिसर स्थित मुख्यद्वार के बगल वाले रास्ते से कतार में अंदर भेजा जा रहा था। लेकिन जैसे-जैसे सुबह करीब आती गई, भक्तों की भीड़ बेकाबू होने लगी। भीड़ के भारी दबाव को देखते हुए तड़के करीब चार बजे जैसे ही मंदिर का मुख्यद्वार खोला गया, पहले दर्शन करने की होड़ में अचानक भगदड़ मच गई। मुख्यद्वार खुलने के बाद लगभग 15 मिनट तक मंदिर परिसर में खौफनाक अफरातफरी और चीख-पुकार का माहौल रहा। इसी दौरान भीड़ के धक्के से ग्रिल से टकराकर गिरने के कारण एक श्रद्धालु के सिर में गंभीर फ्रैक्चर हो गया है, जिसकी स्थिति नाजुक बताई जा रही है।

मुस्लिम प्रभावी सीटों पर ओवैसी का फोकस, गठबंधन की राह नहीं बनी तो अकेले मैदान में कूदने की तैयारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव-2027 को लेकर सभी राजनीतिक दल अपनी तैयारियों में जुटे हैं। इस बीच आल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) भी प्रदेश में अपना सियासी खाता खोलने की कोशिश में जुट गई है। पार्टी की पहली प्राथमिकता गठबंधन है, लेकिन सीटों के बंटवारे पर सहमति नहीं बनी तो एआईएमआईएम अकेले चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है। राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक, एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी उत्तर प्रदेश के चुनावी महत्व को समझते हैं। यही वजह है कि पार्टी उन विधानसभा क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दे रही है, जहां मुस्लिम मतदाता चुनावी नतीजों को प्रभावित करने की स्थिति में हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश से लेकर तराई क्षेत्र के बहराइच तक ओवैसी खुद दौरा कर पार्टी की संभावनाओं का जायजा ले चुके हैं। पार्टी ने फिलहाल प्रयागराज, बहराइच, सहारनपुर, मुरादाबाद, रामपुर और अमरोहा की कई विधानसभा सीटों पर अपनी गतिविधियां बढ़ाई हैं। इन क्षेत्रों में संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने पर जोर दिया जा रहा है। पार्टी की कोशिश चुनाव से पहले ऐसे इलाकों में अपना सियासी आधार मजबूत करने की है, जहां मुस्लिम मतदाताओं की संख्या चुनावी समीकरणों को प्रभावित कर सकती है। गठबंधन को लेकर तस्वीर अभी साफ नहीं है।

'हनुमानगढ़ी में दर्शन, बाहर आकर मछली की दावत और फिर राम-राम'

सीएम योगी का अजय राय पर तंज

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

रायबरेली। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सोमवार को रायबरेली पहुंचे। यहां उन्होंने जिले को 879 करोड़ की परियोजनाओं की सौगात दी। इस मौके पर वह राहुल गांधी पर जमकर बरसे। कहा कि कांग्रेस पार्टी राम मंदिर का विरोध करती रही है। उसे गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला बताया। सीएम ने कहा कि कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय हनुमानगढ़ी में दर्शन करने जाते हैं। बाहर आकर मछली की दावत उड़ाते हैं। फिर, राम-राम चिल्लाते हैं। अरे अयोध्या के बाहर खा लेते, जो खाना था। बेशर्मी की भी एक सीमा होती है, इनके सामने गिरगिट भी शरमा जाता है।

प्रदेश को माफिया प्रदेश बना दिया था

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के भाई की हत्या की गई थी। ये हत्यारों के खिलाफ बयान देने नहीं गए। दुर्दांत माफिया के सामने घुटने टेक दिए। वो तो हमारी सरकार आई, सरकार ने माफिया की भूसी निकाल दी। इन लोगों ने प्रदेश को माफिया प्रदेश बना दिया था। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी का कहना है कि केवल उनके परिवार को ही सम्मान मिले। इन्होंने कभी भारत के क्रांतिकारियों और नायकों को सम्मान देने का कार्य नहीं किया।

देश ने आपातकाल की 'काली छाया' देखी है

सीएम ने आगे कहा कि भारत की सेना जब सीमा पर दुश्मनों से लड़ती है तो आप उससे जवाब मांगते हैं। अयोध्या में श्रीराम के अस्तित्व पर आपकी पार्टी सवाल खड़े करती है। देश ने वर्ष 1975 में आपातकाल की 'काली छाया' देखी है। जंतर मंतर में अभी एक बेटी ने पीएम मोदी पर अभद्र भाषा का प्रयोग किया। बाद में उस बेटी और उसके माता-पिता ने इस बात को स्वीकार किया कि उनकी बेटी ने गलत बोला है। आप अर्बन नक्सलियों के हाथों देश को क्यों बेचना चाहते हैं?

राहुल गांधी से देश कोई अपेक्षा नहीं करता

इस मौके पर सीएम ने कहा कि जो समाज अपने पूर्वजों को विस्मृत कर देता है, उसका कोई भविष्य नहीं होता। भारत की परंपरा और आदर्शों को भुलाकर देश के खिलाफ षड्यंत्र करने का कुछ लोगों ने ठेका ले लिया है। मंगल पांडेय, नाना साहब, तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई ने जिस स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को आगे बढ़ाया, उसी लड़ाई का नेतृत्व रायबरेली क्षेत्र में राना बेनी माधव बख्श सिंह ने किया। यही वजह है कि वर्षों बाद भी लोग उन्हें याद करते हैं। उन्होंने राहुल गांधी के एक बयान का जिक्र करते हुए कहा कि एक व्यक्ति के रूप में देश को उनसे कोई अपेक्षा नहीं है, लेकिन नेता प्रतिपक्ष होने के नाते वह संसद और लोकतंत्र के प्रति जवाबदेह हैं। राहुल गांधी ने संविधान की शपथ ली है, लेकिन भारत की परंपरा और विरासत को कोसना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। वह यूपी के बाहर जाकर यूपी को बदनाम करते हैं। देश के बाहर जाकर देश का अपमान करते हैं। वह देश विरोधी तत्वों को प्रोत्साहित करते हैं।

कांग्रेस ने देश को लूटा

उन्होंने आगे कहा कि अमेठी और रायबरेली इस परिवार को ढोता तो रहा, लेकिन इन्होंने इन जिलों के सामने पहचान का संकट खड़ा किया। यहां सब कुछ एक ही परिवार के नाम पर कर दिया गया। 1925 में काकोरी से ब्रिटिशर्स द्वारा जो खजाना ले जाया जा रहा था, क्रांतिकारियों ने उसे अपने कब्जे में लिया था। कांग्रेस ने उसे काकोरी ट्रेन लूट घटना नाम दिया। अरे लूटा तो आपने है देश को। देश को लूटकर उस धन को ठिकाने लगाने का काम आपने किया। सीएम ने कहा कि आपने भारत नहीं बनाया है, भारत का विभाजन आपने जरूर कराया। भारत के विभाजन और यहां के लोगों के कत्लेआम कराने का दोषी आपका परिवार है। वीर सावरकर के 28 साल की उम्र में दोहरे आजन्म कारावास की सजा हुई। दोनों भाई पोर्टब्लेयर की एक ही सेल्युलर जेल में बंद रहे। 10 साल तक एक दूसरे का चेहरा तक नहीं देखा। जब अटल बिहारी बाजपेयी सरकार ने पोर्टब्लेयर के एयरपोर्ट का नाम वीर सावरकर के नाम पर किया तो कांग्रेस ने उनका नाम हटा दिया था।

भारत का मानसून बेहतर हुआ, खरीफ फसलों को नुकसान की आशंका आई कमी : रिपोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में मानसून की स्थिति हाल के महीनों में काफी बेहतर हुई है, जिससे खरीफ फसलों को व्यापक नुकसान की आशंका कमी आई है। हालांकि, बारिश का वितरण अभी भी एक महत्वपूर्ण कारक बना हुआ है, जिस पर नजर रखना जरूरी है। यह जानकारी एक रिपोर्ट में दी गई। वैश्विक ब्रोकरेज फर्म मैक्वायरी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 19 अगस्त तक संचयी बारिश की कमी घटकर 12.6 प्रतिशत रह गई है, जो जून में 35 प्रतिशत थी। रिपोर्ट में कहा गया, स्थिति में सुधार हो रहा है, हालांकि यह पूरी तरह सामान्य नहीं हुई है। मानसून में सुधार का असर खरीफ फसलों की बुवाई पर भी देखने को मिला है। सीजन की कमजोर शुरुआत के बाद बुवाई में काफी सुधार हुआ है।

जंतर-मंतर पर यौन उत्पीड़न की जांच पहले होगी, महिला प्रदर्शनकारियों की शिकायतों पर कोर्ट गंभीर

नई दिल्ली, एजेंसी। चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने सोमवार को स्पष्ट किया कि जंतर-मंतर पर छात्र प्रदर्शनों के दौरान पुलिस हिंसा के आरोपों की जांच के लिए गठित हाई-पावर्ड एन्क्वायरी कमेटी महिला प्रदर्शनकारियों द्वारा लगाए गए यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार के आरोपों की प्राथमिकता के आधार पर जांच करेगी। CJI ने कहा कि 18 अगस्त के आदेश के अनुसार, कमेटी को महिला प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कथित यौन हिंसा, उत्पीड़न, छेड़छाड़ और अन्य प्रकार की हिंसा से जुड़ी शिकायतों पर प्राथमिकता से विचार करते हुए जल्द से जल्द अंतरिम रिपोर्ट दाखिल करनी है।

यह मामला तब सामने आया, जब सीनियर एडवोकेट शोभा गुप्ता ने 20 जुलाई को जंतर-मंतर पर हुए छात्र प्रदर्शन के दौरान महिला प्रदर्शनकारियों के साथ कथित यौन उत्पीड़न के मामलों पर सुप्रीम कोर्ट से स्वतः संज्ञान लेने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि महिला प्रदर्शनकारियों ने पुलिसकर्मियों द्वारा कथित छेड़छाड़ और यौन उत्पीड़न की शिकायतें की हैं।

इसी मुद्दे पर अलग रिट याचिका भी दायर

इस पर जस्टिस जॉयमाल्य बागची ने बताया कि इसी मुद्दे को लेकर एक अलग रिट याचिका भी दायर की गई है और हाई-पावर्ड कमेटी को मामले की जांच करने के लिए कहा गया है। CJI ने कहा कि कमेटी के अध्यक्ष को शिकायतें प्राप्त करने के लिए नोडल अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार दिया गया है। नोडल अधिकारियों की नियुक्ति के बाद शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया सार्वजनिक की जाएगी।

घाटी में खौफ फैलाने की नई साजिश: कश्मीरी पंडितों को धमकी भरा पत्र वायरल, नाम-पता और वाहनों तक का जिक्र

श्रीनगर। सोशल मीडिया पर एक आतंकी संगठन की ओर से जारी कथित धमकी भरे पत्र के वायरल होने के बाद कश्मीरी पंडित समुदाय और विस्थापित कर्मचारियों में आक्रोश है। 'यूनाइटेड लिबरेशन काउंसिल' के लेटरहेड पर जारी इस पत्र में विस्थापित कश्मीरी पंडितों को सीधे तौर पर निशाना बनाने की धमकी दी गई है। वायरल हो रहे इस धमकी भरे पत्र में कुछ व्यक्तियों के नाम, उनके निवास स्थान और वाहनों के विवरण तक शामिल किए गए हैं। पत्र में घाटी से विस्थापित हुए पंडितों को लेकर भड़काऊ भाषा का प्रयोग किया गया है। साथ ही अंजाम भुगतने की चेतावनी दी गई है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर राकेश हांडू सहित कई लोगों ने इस पत्र को प्रधानमंत्री कार्यालय, केंद्रीय गृह मंत्रालय, जम्मू-कश्मीर के एलजी और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को टैग किया है।

मणिपुर में फिर भड़की हिंसा, उपद्रवियों ने घर में लगाई आग, सीआरपीएफ जवान घायल

इंफाल, एजेंसी। मणिपुर के सेनापति और कांगपोकपी जिलों में आगजनी और गोलीबारी की घटनाओं से तनाव बढ़ गया है। सेनापति में दो समूहों के बीच गोलीबारी में एक CRPF जवान घायल हुआ, जिसकी हालत खतरे से बाहर है। कई घरों में आग लगाए जाने के विरोध में स्थानीय लोगों ने NH-2 को जाम कर दिया। सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है, जबकि ताफोउ कुकी विलेज अथॉरिटी ने दोषियों की 24 घंटे के भीतर पहचान की मांग की है।

कांगपोकपी में घर में लगाई गई आग

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि रात करीब 2:30 बजे कांगपोकपी जिले के ताफोउ कुकी गांव में कुछ उपद्रवियों ने एक घर में आग लगा दी। आगजनी की इस घटना के बाद इलाके में तनाव बढ़ गया।

सेनापति में कई घर आग के हवाले

अधिकारी के मुताबिक, कांगपोकपी में हुई आगजनी की घटना के बाद सुबह करीब 4 बजे सेनापति जिले के नगा ताफोउ इलाके में कई घरों को जला दिया गया। इसके बाद इलाके में स्थिति तनावपूर्ण हो गई।

दो गुटों के बीच गोलीबारी में CRPF जवान घायल

अधिकारी ने बताया कि सुबह करीब 9:20 बजे ताफोउ नगा इलाके में दो समूहों के बीच गोलीबारी हुई, जिसमें एक CRPF जवान घायल हो गया। उसे सेनापति जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है और फिलहाल उसकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है।

आगजनी के विरोध में सड़क पर उतरे लोग

सेनापति में हुई आगजनी की घटनाओं के विरोध में स्थानीय लोगों ने प्रदर्शन किया। बड़ी संख्या में लोग सेनापति गेट पर जमा हुए और राष्ट्रीय राजमार्ग-2 पर लकड़ियां तथा टायर जलाकर सड़क जाम कर दी। इसके कारण इस मार्ग पर वाहनों की आवाजाही प्रभावित हुई।

इलाके में सुरक्षा बढ़ाई गई

अधिकारी ने बताया कि स्थिति को नियंत्रित करने और किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए इलाके में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत कर दी गई है।

'मैं सीनियर आईएएस हूँ, तुमने बदतमीजी की...'

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रशासनिक और न्यायिक हलकों में उस वक्त हड़कंप मच गया जब इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सीनियर IAS अधिकारी और देवीपाटन मंडल की कमिश्नर दुर्गा शक्ति नागपाल के रवैये पर कड़ा रुख अपनाया। हाईकोर्ट ने एक निचली अदालत की महिला जज को फोन कर कथित रूप से प्रभावित करने और डराने-धमकाने के मामले को आपराधिक अवमानना के तहत सुनवाई के लिए संबंधित पीठ को सौंपने का निर्देश दिया है। जस्टिस सैयद कमर हसन रिज़वी की पीठ ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि कथित टेलीफोनिक बातचीत की भाषा और लहजे से प्रथम दृष्टया यह साफ

आभास होता है कि अदालत के पीठासीन अधिकारी को प्रभावित करने का प्रयास किया गया था। अदालत ने इसे 'चौंकाने वाला' करार दिया कि कोई प्रशासनिक अधिकारी किसी लंबित मुकदमे के सिलसिले में सीधे जज से फोन पर संपर्क करे। अदालत ने इसे 'चौंकाने वाला' भी बताया कि कोई पक्षकार/राज्य किसी लंबित मामले के संदर्भ में इस तरह के फोन कॉल के ज़रिए अदालत से संपर्क कर सकता है।

चिराग पासवान ने आरक्षण को बताया संवैधानिक अधिकार, बोले: दुनिया की कोई ताकत इसे खत्म नहीं कर सकती

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने सोमवार को कहा कि आरक्षण एक संवैधानिक अधिकार है जिसे कोई भी अथॉरिटी खत्म नहीं कर सकती। उनका यह बयान जंतर-मंतर पर हुए 'आरक्षण हटाओ आंदोलन' के जवाब में आया, जिसमें प्रदर्शनकारियों ने जाति-आधारित कोटा खत्म करने की मांग की थी। पत्रकारों से बात करते हुए पासवान ने कहा कि क्या आरक्षण कोई ऐसी चीज़ है जिसे सिर्फ़ इसलिए खत्म किया जा सकता है क्योंकि किसी ने ऐसा कह दिया? यह एक संवैधानिक अधिकार है। आरक्षण कोई खैरात नहीं है जो किसी को बांट दी जाए; यह एक संवैधानिक अधिकार है और दुनिया की कोई भी ताकत इसे खत्म नहीं कर सकती।

उन्होंने उन लोगों की आलोचना की जो आरक्षण व्यवस्था में सुधार या समीक्षा करना चाहते हैं, और कहा कि वे इसकी ज़रूरत को नहीं समझते। पासवान ने दलितों के साथ हो रहे भेदभाव का ज़िक्र करते हुए कहा कि उस मंच पर खड़गे के साथ जो हुआ, उसे देखिए। उनके जाने के बाद मंच को शुद्ध किया गया था, है ना? आज भी, एक दलित युवक को घोड़े पर चढ़ने से रोका जाता है; एक दलित लड़के को शादी की बारात निकालने से रोका जाता है। जब बड़े नेता मंदिर जाते हैं, तो कभी-कभी परिसर को गंगाजल से धोया जाता है। तो, यह भेदभाव बना हुआ है, है ना? और ये वही अनुसूचित जातियां हैं जो छुआछूत की शिकार रही हैं। भेदभाव आज भी मौजूद है... मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूं कि जब तक मैं यहां हूं और जब तक राम विलास पासवान के बेटे चिराग पासवान सरकार का हिस्सा हैं, मैं कभी भी इस व्यवस्था को कमज़ोर नहीं होने दूंगा।

अब रेलवे स्टेशनों पर पीने के पानी की होगी कड़ी निगरानी, सीएजी की रिपोर्ट के बाद उठाए ये कदम

सीएजी की ऑडिट में 49 में से आठ स्टेशनों के पानी के नमूनों में ई-कोलाई बैक्टीरिया मिला

नई दिल्ली, एजेंसी। यात्रियों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के लिए रेलवे ने पूरे नेटवर्क में विशेष स्वच्छता अभियान शुरू किया है। स्टेशनों पर पानी की टंकियों, फिल्ट्रेशन सिस्टम और पेयजल ढांचे की सफाई व डिसइंफेक्शन किया जाएगा।

पानी की गुणवत्ता की निगरानी स्रोत से लेकर यात्रियों के पीने के स्थान तक होगी। रेलवे का यह अभियान सीएजी की हालिया रिपोर्ट के बाद अहम है। सीएजी की ऑडिट में 49 में से आठ स्टेशनों के पानी के नमूनों में ई-कोलाई बैक्टीरिया मिला था। रिपोर्ट में पानी की नियमित जांच और क्लोरीन की निगरानी में कमी पर सवाल उठाए गए थे।

रेलवे के द्वारा उठाए जाएंगे ये कदम

पानी के स्रोत, ट्रीटमेंट-फिल्ट्रेशन प्लांट, भूमिगत व ओवरहेड टैंक, पीवीसी टैंक, वाटर बूथ, नल और वितरण केंद्रों की जांच होगी।

टंकियों को खाली कर गाद हटाई जाएगी। सफाई और डिसइंफेक्शन के बाद ढक्कन, वेंट और ओवरफ्लो प्वाइंट की भी जांच होगी।

खराब टैंक, पाइपलाइन और फिल्टर की मरम्मत या उन्हें बदला जाएगा। पेयजल और गैर-पेयजल लाइनों के क्रॉस कनेक्शन की जांच होगी।

पाइपलाइन में लीकेज दूर कर पानी की बर्बादी रोकी जाएगी। वहीं, हैंडपंप और बोरवेल से मिलने वाले पानी की भी जांच होगी, ताकि वह प्रदूषण मुक्त और पीने योग्य रहे।

वाटर कूलर और आरओ-यूवी सिस्टम की जांच

वाटर कूलर की टंकियों की सफाई होगी। कूलर, पाइप और नलों में लीकेज तत्काल ठीक किए जाएंगे।

आरओ-यूवी सिस्टम की जांच होगी। जरूरत के अनुसार नए सिस्टम लगाए जाएंगे और खराब फिल्टर व अन्य हिस्से बदले जाएंगे।

वाटर वेंडिंग मशीनों पर भी सफाई और गुणवत्ता के यही मानक लागू होंगे।

स्रोत, टैंक, कूलर, वेंडिंग मशीन और नलों से पानी के नमूने लेकर भौतिक, रासायनिक और बैक्टीरियोलॉजिकल जांच होगी।

पानी में अवशिष्ट क्लोरीन की रोजाना निगरानी होगी। जरूरत पड़ने पर दोबारा क्लोरीनेशन किया जाएगा।

रेलवे बोर्ड ने मंजूर ओवरहेड और भूमिगत टंकियों के निर्माण व बदलाव के काम में तेजी के निर्देश दिए हैं। जरूरत के अनुसार नए कामों को मंजूरी दी जाएगी। अभियान में मिली कमियों की स्टेशनवार रिपोर्ट तैयार होगी और उनके सुधार की निगरानी की जाएगी। पेयजल व्यवस्था के तहत रेलवे कॉलोनियों और कार्यस्थलों को भी शामिल किया गया है। रेलवे का लक्ष्य नियमित निरीक्षण, सफाई, रखरखाव और पानी की जांच के जरिए यात्रियों और कर्मचारियों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना है।

सीएम से पूनम बोली- 'आत्मनिर्भर बनना चाहती हूं', योगी ने कहा- मन से गोसेवा करो, कष्ट दूर होंगे

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। सीतापुर के गुरुदेव नगर हरगांव की रहने वाली पूनम देवी 'जनता दर्शन' में मुख्यमंत्री से मिलीं और गोपालन की अभिलाषा बताई। इस पर मुख्यमंत्री ने तत्काल उनकी मांगों पर विचार करते हुए अपर मुख्य सचिव (पशुधन) को निर्देश दिया कि इन्हें निराश्रित गाय उपलब्ध कराई जाए और नियमानुसार योजनाओं का लाभ भी दिलाया जाए। वहीं एक दिव्यांग ने अवैध कब्जे की भी शिकायत की, जिस पर मुख्यमंत्री ने जांच कराकर निराकरण का निर्देश दिया।

मुख्यमंत्री को दिए प्रार्थना पत्र में पूनम देवी ने लिखा कि वह गोपालन करके आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं। अभी उनके पास 5 गाय हैं और अन्य गोमाता को रखने के लिए पर्याप्त जगह भी है। ऐसे में उन्हें और भी गाय दिला दी जाएं, जिससे वे दूध आदि की बिक्री कर परिवार को समृद्ध करेंगी। इस पर मुख्यमंत्री ने तत्काल अपर मुख्य सचिव (पशुधन) को निर्देश दिया कि इन्हें निराश्रित गाय उपलब्ध कराई जाए और मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के तहत गोवंश की देखभाल के लिए आर्थिक सहायता भी दिलाई जाए।

गो सेवा करो, बाधाएं और कष्ट मिटेंगे

'जनता दर्शन' में मुख्यमंत्री ने एक-एक कर सभी का हालचाल जाना, फिर सभी की समस्याएं भी पूछीं। पूनम का प्रार्थना पत्र पढ़कर मुख्यमंत्री ने उनकी हौसलाअफजाई भी की। मुख्यमंत्री ने पूनम से कहा कि हम आपको सरकार की तरफ से नियमानुसार योजनाओं का लाभ दिलाएंगे। आप गोसेवा कीजिए क्योंकि गोमाता में 33 कोटि देवताओं का वास होता है। मुख्यमंत्री ने उनसे अनुभव साझा किया कि आप मन से गोसेवा करो, सारी बाधाएं और कष्ट दूर होंगे। पूनम ने भी श्रावण मास में इच्छा पूरी करने के लिए मुख्यमंत्री जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिव्यांग ने की अवैध कब्जे की शिकायत

'जनता दर्शन' में पहुंचे दिव्यांग ने मुख्यमंत्री को बताया कि उनकी जमीन पर किसी ने कब्जा कर लिया है। इस पर मुख्यमंत्री ने जांच कराकर पीड़ित के यथासंभव मदद करने का आदेश दिया। इसके अतिरिक्त सीएम योगी ने प्रदेश के अन्य जनपदों से आए लोगों की समस्याओं के समयबद्ध निस्तारण का भी निर्देश दिया।

मुठभेड़ में बदमाश के पैर में लगी गोली, दो साथी कॉम्बिंग के दौरान पकड़े गए

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। अखंडनगर थाना क्षेत्र में 23-24 अगस्त की देर रात पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ हो गई। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में एक बदमाश पैर में गोली लगने से घायल हो गया, जबकि उसके दो साथियों को पुलिस ने कॉम्बिंग के दौरान गिरफ्तार कर लिया। घायल बदमाश को उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है।

पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल के अनुसार, अखंडनगर पुलिस की बदमाशों से मुठभेड़ के दौरान आत्मरक्षार्थ की गई जवाबी फायरिंग में विपिन निषाद के पैर में गोली लगी। इसके बाद वह घायल हो गया। मौके से भागने का प्रयास कर रहे उसके दो साथियों को पुलिस टीम ने घेराबंदी कर पकड़ लिया। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से चोरी के करीब 13,600 रुपये नकद, लाखों रुपये कीमत के सोने-चांदी के आभूषण, एक अवैध तमंचा, जिंदा व खोखा कारतूस तथा एक मोटरसाइकिल बरामद करने का दावा किया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों ने कुछ दिन पहले एक घर में चोरी की वारदात को अंजाम दिया था। घायल आरोपी की पहचान विपिन निषाद (24) पुत्र रामदेव निषाद, निवासी दामोदरपुर, थाना कादीपुर, सुल्तानपुर के रूप में हुई है। गिरफ्तार उसके साथियों में नागेंद्र उर्फ बबलू (25) पुत्र लालता प्रसाद, निवासी मझगवां, थाना कादीपुर और नीरज (25) पुत्र आशा, निवासी अलीपुर कांपा, थाना अखंडनगर शामिल हैं।

पुलिस के अनुसार विपिन निषाद का आपराधिक इतिहास भी रहा है। उसके खिलाफ कादीपुर और दोस्तपुर थानों में हत्या के प्रयास, चोरी, एनडीपीएस एक्ट और पॉक्सो एक्ट समेत विभिन्न धाराओं में करीब दस मुकदमे दर्ज हैं। वहीं, नागेंद्र उर्फ बबलू के खिलाफ जौनपुर के सरपतहा तथा सुल्तानपुर के दोस्तपुर और मोतिगरपुर थानों में चोरी एवं अन्य अपराधों से संबंधित चार मुकदमे दर्ज बताए गए हैं। अखंडनगर थाना पुलिस ने तीनों आरोपियों के खिलाफ विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस अब बरामद सामान और आरोपियों से पूछताछ के आधार पर अन्य आपराधिक घटनाओं में उनकी भूमिका की जांच कर रही है।

विशाल कांवड़ यात्रा जनवारीनाथ धाम के लिए रवाना

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। सावन मास के पावन अवसर पर बभनगवां घाट स्थित प्राचीन शिव मंदिर से जनवारीनाथ धाम तक विशाल कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया।

यात्रा का शुभारंभ मंदिर में विधि-विधान से पूजा-अर्चना और जलाभिषेक के साथ किया गया। सुबह से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। हर-हर महादेव और बोल बम के जयकारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। सैकड़ों शिवभक्त कांवड़ियें बभनगवां घाट से पवित्र जल लेकर पैदल जनवारीनाथ धाम के लिए रवाना हुए। यात्रा के दौरान जगह-जगह ग्रामीणों द्वारा पुष्प वर्षा कर कांवड़ियों का स्वागत किया गया और जलपान की व्यवस्था की गई। कांवड़ यात्रा समिति ने बताया कि यह यात्रा प्रतिवर्ष क्षेत्र में सुख-समृद्धि और शांति के लिए निकाली जाती है। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य युवाओं में धर्म और संस्कृति के प्रति जागरूकता लाना है। यात्रा के समापन पर जनवारीनाथ धाम में सभी कांवड़ियों द्वारा भगवान शिव का जलाभिषेक किया जाएगा। इस अवसर पर सूरज सिंह उमेश पांडे संतोष पाल महेंद्र वर्मा रामचंद्र वर्मा सूरज शक्ल पप्पू शक्ल शैलेंद्र तिवारी शुभम पांडे राहुल शुक्ल उमेश शुक्ल शैलेश मिश्रा उमाकांत मिश्रा आदि लग उपस्थित रहे।

बलिया में सरयू की बाढ़ ने जान सांसत में डाली, एनडीआरएफ ने राहत अभियान चलाकर बचाई 100 जिंदगियां

> भोजपुरवा में देर शाम से जलभराव के कारण गांव में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला जा रहा है। इनमे से अधिकतर लोगों के बंधे किनारे आस पास के गांवों में अपना मकान है। जिनके पास व्यवस्था नही है। उन्हें पर्वतपुर प्राथमिक विद्यालय में बने बाढ़ राहत शिविर में रखा जा रहा है। उनके भोजन पानी व मवेशियों के चारे पानी की मुकम्मल व्यवस्था की गई है।
>
> **-डा.पुष्कर मिश्रा, एसडीएम , बांसडीह**

आर्यावर्त संवाददाता

बांसडीह (बलिया)। सरयू के प्रचंड उफान ने बांसडीह के भोजपुरवा इलाके को अपनी आगोश में ले लिया है। चारों तरफ फैले अथाह पानी ने सैकड़ों जिंदगियों को रविवार शाम मौत के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया था। इसकी वजह से जान बचाने की कोशिश के बाद प्रशासन ने मोर्चा संभाला।

सूचना पाकर एसडीएम डा. पुष्कर मिश्रा और पुलिस क्षेत्राधिकारी जयशंकर मिश्र के नेतृत्व में प्रशासनिक अमला रविवार शाम ढलते ही मैदान में उतर चुका था। लेकिन घनघोर अंधेरे और उफनती लहरों के बीच किसी भी संभावित हादसे से बचने के लिए रात को हाथ थामे रखा गया।

भोर की पहली किरण के साथ शुरू हुआ जीवन रक्षक मिशन

जैसे ही सोमवार की सुबह सूरज की रोशनी बिखरी, एनडीआरएफ के जांबाज जवानों ने अपनी मोटरबोट्स के साथ पानी के साम्राज्य पर धावा बोल दिया। प्राथमिकता पर बुजुर्ग, मासूम बच्चे और महिलाएं रहीं। एक एक घर तक पहुंचकर परिवारों को राशन सामान सहित सुरक्षित तटबंधों (बंधे) तक लाया गया।

नदी के गेज पर दर्ज आंकड़ों में हल्की नरमी देखी गई है। लेकिन भले ही जलस्तर में कुछ सेंटीमीटर की कमी आई हो, लेकिन धरातल पर तबाही का मंजर जस का तस बना हुआ है। सोमवार को भी दुश्वारी जस की तस बनी रहने और बारिश की सूरत बनने से लोग परेशान नजर आए।

खौफनाक रात के बाद उम्मीद का किनारा

गांव के मुन्ना यादव, राजेंद्र, संजय, हीरालाल, सुधीर श्रीराम ,योगेंद्र ,स्वामीनाथ राधाकृष्ण, मुनिलाल, मुकेश, धनजी, बलराम, और जवाहर यादव समेत दर्जनों परिवारों ने वो खौफनाक रात छतों पर काटते हुए गुजारी। सोमवार सुबह जब बचाव दल की नावें उनके किवाड़ तक पहुंचीं, तब जाकर ग्रामीणों की आंखों में जिंदगी की चमक लौटी। फिलहाल सभी विस्थापितों को सुरक्षित बंधे पर अस्थायी शिविरों में पहुंचाया जा चुका है और स्थिति पर कड़ी नजर रखी जा रही है।

11 हजार वोल्ट लाइन की चपेट में आने से संविदा लाइनमैन की मौत, परिजनों में आक्रोश

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। बंधुआकलां थाना क्षेत्र में रविवार रात विद्युत लाइन की मरम्मत के दौरान करंट की चपेट में आने से एक संविदा लाइनमैन की मौत हो गई। हादसा बंधुआकलां बाजार स्थित बब्बू मार्केट के पीछे उस समय हुआ, जब लाइन में आई खराबी को ठीक करने के लिए लाइनमैन पोल पर चढ़कर काम कर रहे थे। घटना के बाद मौके पर ग्रामीणों और परिजनों की भीड़ जुट गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक की पहचान जफर अब्बास (45) के रूप में हुई है। वह असरोगा पावर हाउस में संविदा लाइनमैन के पद पर कार्यरत थे। बताया गया कि रविवार रात करीब 9रू30 बजे विभागीय निर्देश पर वह बब्बू मार्केट के पीछे 11 हजार वोल्ट की विद्युत लाइन में आई खराबी को दूर करने के लिए पोल पर चढ़े थे। इसी दौरान अचानक लाइन में करंट प्रवाहित हो गया। करंट की चपेट में आने से जफर अब्बास पोल से नीचे गिर पड़े और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण और मृतक के परिजन मौके पर पहुंच गए। घटना को लेकर लोगों में आक्रोश दिखाई दिया। बंधुआकलां थाना प्रभारी प्रमोद कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। सीओ सिटी राघवेंद्र सिंह ने भी घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी है। विद्युत लाइन पर काम करने के दौरान करंट लगने से लाइनमैन की मौत की यह अगस्त माह में जिले में तीसरी घटना बताई जा रही है। इससे पहले अखंडनगर थाना क्षेत्र के अलीपुर उपकेंद्र और लंभुआ उपकेंद्र में भी लाइन की मरम्मत के दौरान करंट की चपेट में आने से दो लाइनमैनों की मौत हो चुकी है।

गोरखपुर बिजली निगम की सख्ती : शटडाउन के बाद भी कर्मचारी को लगा करंट

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

गोरखपुर। बिजली के तार या ट्रांसफार्मर पर काम करते समय शटडाउन के बाद भी करंट आने पर बड़ी कार्रवाई होगी। बिजली निगम संबंधित उपकेंद्र के निविदाकर्मियों के साथ ही सब स्टेशन ऑपरेटरों (एसएसओ) पर भी कार्रवाई करेगा। सभी को बर्खास्त किया जाएगा। हाल के दिनों में बिजली से जुड़े हादसों के बाद निगम के अधिकारियों ने सख्ती के निर्देश दिए हैं।

बिजलीकर्मियों को स्पष्ट निर्देश हैं कि वह बिजली आपूर्ति में गड़बड़ी की शिकायत पर काम करने के पहले उपकेंद्र पहुंचे। यहां संबंधित फीडर का अपने नाम से शटडाउन लें और फिर जाकर काम करें।

गड़बड़ी दूर होने के बाद खुद उपकेंद्र पहुंचें और फिर शटडाउन वापस कराएं। लेकिन ज्यादातर बिजलीकर्मी गड़बड़ी की सूचना पर मौके पर पहुंचते हैं और फिर फोन पर शटडाउन लेते हैं। काम पूरा कर फोन से ही शटडाउन वापस कराते हैं।

कभी-कभी शटडाउन वापस करने में एसएसओ की तरफ से गलती होने पर कर्मचारी को इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। इसे देखते हुए बिजली निगम के चेयरमैन ने सख्ती के निर्देश दिए हैं। लाइन या ट्रांसफार्मर पर कार्य करने के दौरान करंट से हादसा होने पर संबंधित उपकेंद्र के सभी निविदाकर्मियों को सेवा से हटा दिया जाएगा। इनमें एसएसओ भी शामिल हैं।

राष्ट्रगान के अपमान पर भड़के कांग्रेसी, कोतवाली में दी तहरीर

सुल्तानपुर। जिला व शहर कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में सोमवार को कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा और शहर अध्यक्ष शकील अंसारी के नेतृत्व में पार्टी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता कोतवाली पहुंचे। इस दौरान शहर अध्यक्ष शकील अंसारी की ओर से पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर कथित रूप से राष्ट्रगान के अपमान से जुड़े मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर निष्पक्ष जांच की मांग की गई। कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस कमेटी से नियुक्त पर्यवेक्षक अनीस खान भी मौजूद रहे। शिकायती पत्र में कहा गया है कि 22 अगस्त 2026 की शाम करीब 8 बजे ऊनवा के पूरन नगर स्थित एमबीएस इंटर कॉलेज परिसर में 46वें प्रांतीय अधिवेशन एवं शैक्षिक संगोष्ठी कार्यक्रम के दौरान उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना को पुलिस की ओर से गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। शिकायतकर्ता शहर अध्यक्ष शकील अंसारी का आरोप है कि इसके तत्काल बाद राष्ट्रगान बजाया गया।

15 वर्षों में चार प्रधान बदले, नहीं बनी 500 मीटर सड़क

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। विकासखंड बल्दीराय क्षेत्र के हलियापुर थाना अंतर्गत जरई कला गांव में विकास के दावे जमीनी हकीकत से मेल नहीं खाते नजर आ रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि पिछले करीब 15 वर्षों में चार ग्राम प्रधान बदल गए, लेकिन महेंद्र सिंह के घर के पास से उसकामऊ गांव की ओर जाने वाले करीब 500 मीटर रास्ते का निर्माण आज तक नहीं हो सका। सड़क पर गड्ढे, कीचड़ और जलभराव के चलते ग्रामीणों का आवागमन मुश्किल हो गया है।

छात्रा ने बनाया वीडियो शोसल मीडिया पर किया वायरल

समस्या से परेशान गांव की स्कूली छात्रा सिया सिंह ने खुद वीडियो बनाकर सड़क की बदहाली को सोशल मीडिया पर सामने रखा। वायरल वीडियो में छात्रा सड़क की स्थिति दिखाते हुए बताती है कि इस रास्ते से सैकड़ों छात्र-छात्राएं और ग्रामीण आवागमन करते हैं। बरसात के दौरान पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है, जबकि चार पहिया वाहन निकलना लगभग असंभव हो जाता है।

छात्रा ने प्रधानों पर उठाए सवाल

वीडियो में सिया सिंह ने कहा कि पिछले 15 वर्षों में उनकी पीढ़ी ने चार ग्राम प्रधान देखे, लेकिन किसी ने भी इस सड़क का निर्माण पूरा नहीं कराया। छात्रा का आरोप है कि चुनाव के समय वोट मांगने के लिए जनप्रतिनिधि और प्रत्याशी ग्रामीणों के बीच पहुंचते हैं, लेकिन सड़क की समस्या पर गंभीरता नहीं दिखाई जाती। ग्रामीणों का कहना है कि इस मार्ग से खेतों, बाजार और स्कूल आने-जाने वाले छात्राओं व छात्र किसान तथा नागरिको का रोजाना आवागमन होता है। आरोप है कि मुख्य रास्ते का एक हिस्सा खेत मालिक द्वारा बंद कर दिए जाने के बाद यही रास्ता ग्रामीणों के लिए प्रमुख आवागमन का साधन रह गया है।

शीबा हत्याकांड: चलती कार में दबाया गला, सांस चलते देख ईंट से कुचलकर मारा, दूसरी पत्नी की हत्या की पूरी कहानी

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मेरठ के शीबा हत्याकांड में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। पांच बेटियों का पिता होने के बावजूद बेटे की चाहत में शादी कर दूसरी पत्नी शीबा (26) की हत्या करने के आरोपी सादिक को पुलिस ने रविवार को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस का कहना है कि सादिक कार चला रहा था। कार में पीछे बैठी शीबा का गला उसकी सास वसीला, सादिक की पहली पत्नी आसिया ने दबाया था।

अधमरी हालत में गन्ने के खेत में फेंकने पर उन्होंने उसकी सांस चलती देखी तो सादिक, उसके भाइयों, वसीला व आसिया ने ईंट से सिर और चेहरा कुचलकर उसकी हत्या कर दी थी। रविवार को ही पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था। अब पुलिस सादिक के भाई आबिद की गिरफ्तारी का प्रयास कर रही है।

एसपी देहात अभिजीत कुमार ने बताया कि भावनपुर के सियाल गांव निवासी शीबा की शादी वर्ष 2019 में कंकरखेड़ा क्षेत्र के गांव मोहम्मदपुर लाला निवासी शाहरुख के साथ हुई थी। दोनों के पांच साल की बेटी नविया है।

शाहरुख कुछ समय के लिए गाजियाबाद की सीमेंट फैक्टरी में काम करने गया था। इसी दौरान शीबा की मुलाकात गांव के ही सादिक से हुई और दोनों के बीच प्रेम संबंध हो गए। बाद में दोनों ने कोर्ट मैरिज कर ली। सादिक पहले से शादीशुदा था। उसकी पहली पत्नी आसिया से पांच बेटियां हैं।

> **प्रेम संबंध के बाद पहली पत्नी से विवाद का आरोप**
>
> जुनैद का आरोप है कि सादिक शीबा की बेटी को अपने साथ रखने के लिए तैयार नहीं था और अपनी पहली पत्नी आसिया और पांच बच्चों के साथ रहता था। इसे लेकर शीबा और सादिक के बीच विवाद होता था। आरोप है कि विरोध करने पर सादिक, उसकी मां वसीला, पहली पत्नी आसिया और भाई आबिद शीबा के साथ मारपीट और विवाद करते थे।

आसिया और सादिक में होता था विवाद

आसिया के बेटा न होने के कारण सादिक ने शीबा से शादी की थी। बेटा होने के बाद आसिया को उसकी सास वसीला ताने देने लगी थी। इस बात पर आसिया और सादिक में विवाद होता था। इधर, शीबा अपनी पहले पति की बेटी नविया को भी अपने साथ रखना चाहती थी। इसके चलते सादिक और उसके परिजनों ने शीबा के 18 माह के बेटे को अपने पास रखने और शीबा की हत्या की साजिश रची थी।

शीबा की कॉल से खुला हत्या का राज

19 अगस्त को सादिक अपने परिवार के सदस्यों के साथ शीबा को जबरन कार में लेकर निकला था। रास्ते में शीबा ने अपने भाई जुनैद को कॉल कर बताया था कि उसे जबरन कार में ले जाया जा रहा है और सादिक उसे देहरादून ले जाने की बात कह रहा है। इसके बाद कार में विवाद हुआ। छीना-झपटी के दौरान शीबा का मोबाइल टूट गया। जुनैद का आरोप है कि इसी दौरान आरोपियों ने कार में ही उसका गला दबा दिया लेकिन इससे उसकी मृत्यु नहीं हुई तो उन्होंने खेत में शीबा को फेंकने के बाद ईंट से वार कर उसकी जान ले ली। 21 अगस्त को सोशल मीडिया पर मृतका शीबा की तस्वीर देखने के बाद परिवार ने सरधना थाना पहुंचकर उसकी पहचान की थी। अभी शीबा के शव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट आना बाकी है। पुलिस ने वारदात में प्रयोग की गई कार और ईंट भी सादिक की निशानदेही पर बरामद कर ली है।

यह था पूरा मामला

मेरठ के सरधना क्षेत्र में कुशावली गांव के जंगल में गन्ने के खेत से मिले युवती के शव की पहचान भावनपुर क्षेत्र के सियाल गांव निवासी शीबा के रूप में हो गई है। पहचान के बाद मृतका के भाई ने कंकरखेड़ा क्षेत्र के युवक, उसकी पहली पत्नी और परिजनों पर हत्या कर शव छिपाने का आरोप लगाया है।

सरधना पुलिस ने तहरीर के आधार पर पांच नामजद आरोपियों के खिलाफ हत्या, साक्ष्य मिटाने और साजिश की धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू की।

2019 में हुई थी शीबा की शादी

सियाल गांव निवासी जुनैद पुत्र मुस्तफा ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसकी बड़ी बहन शीबा का निकाह वर्ष 2019 में कंकरखेड़ा के मोहम्मदपुर लाला गांव निवासी शाहरुख के साथ हुआ था। इस शादी से शीबा की एक बेटी हैं। भाई के अनुसार, शादी के करीब तीन साल बाद उसी गांव का सादिक पुत्र बाबर शीबा को अपने साथ रखने लगा।

मुझे जबरन ले जा रहे हैं...शीबा की कॉल से खुला राज

एसपी देहात अभिजीत कुमार और सीओ सरधना आशुतोष कुमार ने बताया कि 19 अगस्त को सादिक अपने परिवार के सदस्यों के साथ शीबा को जबरन कार में लेकर निकला था। रास्ते में शीबा ने अपने भाई जुनैद को कॉल कर बताया था कि उसे जबरन कार में ले जाया जा रहा है और सादिक उसे देहरादून ले जाने की बात कह रहा है। इसके बाद कार में विवाद हुआ। छीना-झपटी के दौरान शीबा का मोबाइल टूट गया। आरोप है कि इसी दौरान सादिक ने कार में ही उसका गला घोट दिया। हत्या के बाद शव को सरधना क्षेत्र के दौलतपुर गांव के ईख के खेत में फेंक दिया। आरोपी ने शव की पहचान छिपाने के लिए शीबा के चेहरे और सिर पर ईंट से कई वार किए। 21 अगस्त को सोशल मीडिया पर मृतका शीबा की तस्वीर देखने के बाद परिवार ने सरधना थाना पहुंचकर उसकी पहचान की।

आरक्षण के विरोध में खड़े छात्रों के साथ प्रेसवार्ता पर भाजपा अपनी स्थिति स्पष्ट करे: राजेन्द्र पाल गौतम

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के उत्तर प्रदेश प्रभारी एवं पूर्व मंत्री राजेन्द्र पाल गौतम ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में भाजपा और प्रदेश सरकार पर आरक्षण, शिक्षक भर्ती तथा जातिगत जनगणना के मुद्दे पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि दो दिन पहले उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने लखनऊ में आरक्षण का विरोध कर रहे कुछ छात्रों के साथ प्रेसवार्ता की थी। ऐसे में भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वह आरक्षण के विरोध में है।राजेन्द्र पाल गौतम ने कहा कि यदि उपमुख्यमंत्री आरक्षण का विरोध करने वाले छात्रों के साथ प्रेसवार्ता कर रहे हैं और उनके पक्ष में खड़े होने की बात कह रहे हैं तो भाजपा को अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। उन्होंने सवाल किया कि कहीं सरकार की मानसिकता अनुसूचित जाति,

अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग को उनका संवैधानिक अधिकार और न्याय देने की नहीं है और इसी वजह से इस तरह का माहौल बनाया जा रहा है।उन्होंने कहा कि उपमुख्यमंत्री ने प्रेसवार्ता के दौरान सभी छात्रों और युवाओं को न्याय दिलाने तथा दो दिन के भीतर केंद्रीय मंत्री से मिलने की बात कही थी। उन्होंने सरकार से सवाल किया कि क्या उपमुख्यमंत्री केंद्रीय मंत्री से मिले और यदि मिले तो दोनों के बीच क्या बातचीत हुई। उन्होंने कहा कि यदि भाजपा वास्तव में छात्रों और युवाओं के साथ है तो 69 हजार शिक्षक भर्ती मामले में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों के साथ हुए कथित अन्याय पर सरकार अपना जवाब दे।कांग्रेस नेता ने कहा कि 69 हजार शिक्षक भर्ती में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए निर्धारित करीब आठ हजार पद सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों से भरे जाने का आरोप लगाया गया है। उन्होंने कहा कि पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट में भी आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों के आरक्षण से संबंधित अनियमितताओं की बात सामने आई है। इसके बावजूद प्रदेश सरकार की ओर से पिछड़ों और दलितों के अधिकारों को लेकर अभी तक कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया है। उन्होंने सवाल किया कि क्या इसे यह माना जाए कि प्रदेश सरकार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के हितों के खिलाफ काम कर रही है।जातिगत जनगणना के मुद्दे पर राजेन्द्र पाल गौतम ने कहा कि संसद में गृहमंत्री और प्रधानमंत्री की ओर से जातिगत जनगणना कराने की बात कही गई थी, लेकिन हाल में जनगणना आयुक्त की ओर से जारी किए गए प्रपत्र में अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए अलग से कोई कॉलम नहीं है। उन्होंने कहा कि इससे भाजपा की सामाजिक न्याय को लेकर नीति पर सवाल खड़े होते हैं। भाजपा को स्पष्ट करना चाहिए कि अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को उनका अधिकार देने के लिए सरकार की क्या नीति है।प्रेसवार्ता में उन्होंने उन्नाव में राष्ट्रगान बजने के दौरान विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के कार्यक्रम स्थल से अपनी गाड़ी में बैठकर चले जाने के आरोप को भी उठाया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रगान के अपमान के आरोप में कांग्रेस की ओर से प्रदेश के विभिन्न जिलों और शहरों में पुलिस को शिकायत देकर प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की गई, लेकिन अभी तक प्राथमिकी दर्ज नहीं की गई है।राजेन्द्र पाल गौतम ने कहा कि सरकार और पुलिस प्रशासन को स्पष्ट करना चाहिए कि विधानसभा अध्यक्ष के खिलाफ शिकायत पर अब तक क्या कार्रवाई की गई। उन्होंने सवाल किया कि क्या कोई विधानसभा अध्यक्ष, मंत्री या अन्य जनप्रतिनिधि संविधान और कानून से ऊपर है। उन्होंने कहा कि यदि घटना का वीडियो उपलब्ध है तो सरकार को मामले की निष्पक्ष जांच कराकर आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए।उन्होंने आरोप लगाया कि विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के इशारे पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं के खिलाफ छोटी-छोटी बातों पर प्राथमिकी दर्ज कराई जाती है। उन्होंने कानपुर में चढ़ावा चोरी के मुद्दे को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए धरना-प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं को थाने में बैठाया गया और उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई गई।प्रदेश कांग्रेस प्रभारी ने कहा कि यदि पुलिस कांग्रेस कार्यकर्ताओं के मामलों में तत्काल कार्रवाई करती है तो राष्ट्रगान के अपमान के आरोप वाले मामले में भी कानून के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने मांग की कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कर सतीश महाना के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जाए और प्रदेश सरकार तत्काल आवश्यक कार्रवाई करे।प्रेसवार्ता में प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन एवं पूर्व मंत्री डॉ. सी.पी. राय, पूर्व विधायक इन्दल रावत, प्रवक्ता डॉ. उमा शंकर पाण्डेय, प्रवक्ता अंशू अवस्थी, प्रवक्ता प्रियंका गुप्ता, प्रवक्ता डॉ. अलीमुल्लाह खान, प्रवक्ता सचिन रावत सहित कांग्रेस के अन्य नेता और पदाधिकारी मौजूद रहे।

माल पुलिस ने गैर जमानती वारंट के आरोपी को दबिश देकर किया गिरफ्तार

लखनऊ। न्यायालय से जारी गैर जमानती वारंट के अनुपालन में माल थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए लंबे समय से वांछित चल रहे वारंटी अभियुक्त को उसके निवास स्थान पर दबिश देकर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार 24 अगस्त 2026 को वारंटी अभियुक्तों की तलाश के दौरान थाना माल पुलिस टीम को अनूप अवस्थी पुत्र बालकराम, निवासी सालेहनगर, थाना माल, लखनऊ के घर पर मौजूद होने की जानकारी मिली। इसके बाद पुलिस टीम ने उसके निवास स्थान पर दबिश देकर उसे गिरफ्तार कर लिया।पुलिस के मुताबिक अनूप अवस्थी की उम्र करीब 31 वर्ष है और वह मजदूरी का कार्य करता है। उसके विरुद्ध वाद संख्या 532/2026 में धारा 170, 126 और 135 बीएनएसएस के तहत मामला दर्ज है। इस मामले में अभियुक्त के न्यायालय में उपस्थित न होने पर माननीय न्यायालय द्वारा उसके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया गया था।

○ संक्षेप ○

जैन मंदिर में चोरी का 48 घंटे में खुलासा, पूर्व सुरक्षा गार्ड चोरी के शत-प्रतिशत माल के साथ गिरफ्तार

लखनऊ। बाजारखाला थाना पुलिस ने ऐशबाग स्थित जैन मंदिर चैत्यालय में हुई चोरी की घटना का 48 घंटे के भीतर सफल अनावरण करते हुए एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी के कब्जे से मंदिर से चोरी की गई भगवान अनन्त नाथ की प्रतिमा, पंचमेरू, सिंहासन एवं छत्र समेत चोरी का शत–प्रतिशत सामान और नकदी बरामद की है। आरोपी पूर्व में इसी मंदिर परिसर में सुरक्षा गार्ड के रूप में काम कर चुका था और उसे मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था तथा वहां रखी बहुमूल्य धातु की धार्मिक वस्तुओं की जानकारी थी।पुलिस के अनुसार 20/21 अगस्त 2026 की मध्य रात्रि को मिल रोड, ऐशबाग स्थित आटा मिल परिसर के जैन मंदिर चैत्यालय में चोरी की घटना हुई थी। चोर मंदिर से भगवान अनन्त नाथ की पीली धातु की एक प्रतिमा, सफेद धातु के पांच पंचमेरू, सफेद धातु के पांच सिंहासन छत्र, सफेद धातु का एक सिंहासन तथा नकदी चोरी कर ले गया था। घटना की सूचना मिलने पर थाना बाजारखाला में मुकदमा अपराध संख्या 163/2026, धारा 305/331(2) भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया गया था।मंदिर जैसे संवेदनशील धार्मिक स्थल में चोरी की घटना को गंभीरता से लेते हुए उच्चाधिकारियों के निर्देशन में पुलिस टीमों का गठन किया गया। टीमों ने घटनास्थल और उसके आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज का गहनता से अवलोकन किया। इसके साथ ही तकनीकी सूचना, सर्विलांस और मुखबिर तंत्र को सक्रिय करते हुए संदिग्धों के बारे में जानकारी जुटाई गई। पुलिस टीम के लगातार प्रयासों और कड़ी मेहनत के बाद घटना का 48 घंटे के भीतर खुलासा कर दिया गया।पुलिस ने घटना में शामिल संजय शुक्ला पुत्र लल्लूराम शुक्ला, उम्र करीब 45 वर्ष, निवासी ग्राम जहांसापुर, थाना महोली, जनपद सीतापुर को इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान के सामने स्थित कॉम्प्लेक्स, थाना विभूतिखंड, लखनऊ से गिरफ्तार किया।पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपी करीब छह माह पहले आटा मिल, गुलजार नगर में सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करता था।

स्कूल के कार्यालय से लैपटॉप और मोबाइल चोरी करने वाला युवक गिरफ्तार

लखनऊ। मोहनलालगंज थाना पुलिस ने स्कूल के कार्यालय में घुसकर लैपटॉप और मोबाइल चोरी करने के मामले का खुलासा करते हुए एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी के कब्जे से चोरी किया गया लेनोवो कंपनी का लैपटॉप और एक कीपैड मोबाइल बरामद किया है। आरोपी को आवश्यक विधिक कार्रवाई के बाद न्यायालय के समक्ष पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया।पुलिस के अनुसार 23 अगस्त 2026 को इन्द्रेश मिश्र पुत्र स्व. हरिशंकर मिश्र, निवासी एन–344, आशियाना कॉलोनी, लखनऊ ने थाना मोहनलालगंज में लिखित शिकायत दी थी। शिकायत में बताया गया था कि एक अज्ञात व्यक्ति ने स्कूल के कार्यालय में अनधिकृत रूप से प्रवेश कर वहां रखे कीमती सामान, एक मोबाइल फोन और लेनोवो कंपनी का लैपटॉप चोरी कर लिया है। शिकायत के आधार पर थाना मोहनलालगंज में मुकदमा अपराध संख्या 315/2026 धारा 305(ए) भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया गया।घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस उपायुक्त दक्षिणी के निर्देश पर आरोपी की गिरफ्तारी और चोरी किए गए सामान की बरामदगी के लिए दो पुलिस टीमों का गठन किया गया। पुलिस टीमों ने तकनीकी साक्ष्यों, मैनुअल प्रयासों और स्थानीय सूचना तंत्र के माध्यम से आरोपी की तलाश शुरू की। लगातार प्रयास के बाद पुलिस ने रौनक उर्फ मोहित पुत्र विधना प्रसाद, निवासी ग्राम सरईं गुदौली, थाना गोसाईगंज, लखनऊ, उम्र करीब 18 वर्ष को गिरफ्तार कर लिया।पुलिस पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह नशे का आदी है और नशा करने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। इसी वजह से उसने स्कॉलर स्कूल के कार्यालय में घुसकर लैपटॉप और मोबाइल चोरी कर लिया था। आरोपी के अनुसार वह चोरी किए गए सामान को बेचने की फिराक में था, लेकिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया।पुलिस ने आरोपी की निशानदेही और कब्जे से चोरी किया गया एक लेनोवो लैपटॉप तथा एक कीपैड मोबाइल बरामद किया है।

अवैध डेयरियों के खिलाफ कार्रवाई में पकड़ी गई 243 भैंसों की नीलामी, नगर निगम को मिले 58.89 लाख रुपये

लखनऊ। थाना पारा क्षेत्र में अवैध डेयरियों के विरुद्ध चलाए गए विशेष अभियान के दौरान पकड़े गए पशुओं की सोमवार को नगर निगम लखनऊ ने खुली बोली के माध्यम से नीलामी कराई। नगर निगम मुख्यालय स्थित त्रिलोकनाथ सभागार में आयोजित नीलामी में कुल 41 लोगों ने भाग लिया। नीलामी प्रक्रिया निर्धारित नियमों और शर्तों के तहत संपन्न कराई गई।नीलामी में कुल 243 भैंसों को बोली के माध्यम से बेचा गया, जिससे नगर निगम को 58 लाख 89 हजार रुपये की धनराशि प्राप्त हुई। अधिकारियों के अनुसार पूरी प्रक्रिया पारदर्शी तरीके से खुली बोली के आधार पर कराई गई और प्रतिभागियों को निर्धारित नियमों के अनुरूप नीलामी में शामिल होने का अवसर दिया गया।नगर निगम के विशेष अभियान के दौरान पकड़े गए पशुओं को शहर के विभिन्न कांजीहाउस और गोशालाओं में रखा गया था। इनमें ऐशबाग कांजीहाउस, ठाकुरगंज कांजीहाउस, आलमबाग कांजीहाउस, पीजीआई कांजीहाउस, कान्हा उपवन गोशाला और राधा उपवन गोशाला शामिल हैं। अभियान के बाद इन स्थानों पर निरुद्ध पशुओं की नियमानुसार प्रक्रिया पूरी कर नीलामी कराई गई।नीलामी की कार्यवाही के दौरान नगर निगम की नीलामी समिति के सदस्य अपर नगर आयुक्त अरुण कुमार गुप्त, डॉ. अरविंद कुमार राव, वित्त एवं लेखा अधिकारी महामिलिंद लाल, मुख्य कर निर्धारण अधिकारी अशोक सिंह, विनय कुमार राय, पशु कल्याण अधिकारी डॉ. अभिनव वर्मा तथा जोन–1 के जोनल अधिकारी ओम प्रकाश मौजूद रहे।नगर निगम प्रशासन के अनुसार शहर में अवैध डेयरियों के संचालन और उनसे उत्पन्न होने वाली गंदगी, प्रदूषण तथा जनस्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को देखते हुए अभियान आगे भी जारी रखा जाएगा। नगर निगम का उद्देश्य शहर को स्वच्छ, व्यवस्थित और प्रदूषणमुक्त बनाए रखना है। साथ ही नियमों का उल्लंघन करने वाले डेयरी संचालकों के खिलाफ नियमानुसार प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।नगर निगम अधिकारियों ने कहा कि शहर की स्वच्छता व्यवस्था और जनस्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली गतिविधियों पर निगरानी लगातार जारी रहेगी तथा अभियान के दौरान आवश्यकतानुसार कार्रवाई की जाएगी।

नगराम पुलिस ने लंबे समय से न्यायालय से गैरहाजिर चल रहे वारंटी को घर से दबोचा

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। नगराम थाना पुलिस ने न्यायालय में नियत तिथियों पर लंबे समय से उपस्थित नहीं हो रहे वारंटी अभियुक्त के खिलाफ चल रही कार्रवाई के तहत उसे गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार अभियुक्त संतोष उर्फ कल्टा पुत्र स्व. शिवबालक, उम्र करीब 25 वर्ष, ग्राम मदारपुर मजरा तमोरिया, थाना नगराम, लखनऊ का निवासी है। उसके विरुद्ध न्यायालय द्वारा गैर जमानती वारंट जारी किया गया था।पुलिस के मुताबिक संतोष उर्फ कल्टा के खिलाफ थाना नगराम में वाद संख्या 123654/2024 तथा अपराध संख्या 147/2024 से संबंधित मामला दर्ज है। इसमें धारा 379, 511, 323, 504 और 506 भारतीय दंड संहिता के तहत कार्रवाई की गई थी। न्यायालय में मामले की सुनवाई के दौरान अभियुक्त निर्धारित तिथियों पर काफी लंबे समय से उपस्थित नहीं हो रहा था। लगातार गैरहाजिर रहने के कारण न्यायालय की ओर से उसके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया गया।न्यायालय से जारी वारंट के अनुपालन और वांछित वारंटी अभियुक्त की गिरफ्तारी के लिए थानाध्यक्ष नगराम के निर्देशन में पुलिस टीम गठित की गई। पुलिस टीम ने अभियुक्त की तलाश शुरू की और उसके संभावित ठिकानों पर दबिश दी। इसी क्रम में 23 अगस्त 2026 को पुलिस टीम ने संतोष उर्फ कल्टा को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने अभियुक्त के विरुद्ध नियमानुसार विधिक कार्रवाई पूरी की और उसे न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए जाने के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

'लखनऊ हमारी कर्मभूमि' : यूपी में भावुक हुए मुख्य निर्वाचन ज्ञानेश कुमार, बोले– यहीं से सीखा चुनौतियों

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार अपने दो दिवसीय दौरे पर सोमवार को लखनऊ पहुंचे। राजधानी आगमन के साथ ही वह अपने पुराने शिक्षण संस्थान कॉल्विन तालुकदार्स कॉलेज पहुंचे और छात्रों के साथ सीधा संवाद किया। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों को चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता समझाते हुए बूथ स्तर के अधिकारियों (बीएलओ) की सराहना की और उन्हें लोकतंत्र की असली नींव करार दिया।

कॉल्विन तालुकदार्स कॉलेज परिसर में प्रवेश करते हुए मुख्य निर्वाचन आयुक्त काफी भावुक नजर आए। उन्होंने कहा, ₹लखनऊ से मेरा बहुत गहरा और पुराना नाता है। यहीं से शुरुआती पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं उच्च शिक्षा के लिए आगे गया था।

लंबे समय बाद अपनी कर्मभूमि लखनऊ में उत्तर प्रदेश के मतदाताओं को संदेश देने आया हूं।

इस विद्यालय में बीता समय मेरे जीवन का सबसे निर्णायक मोड़ था, जहां मुझे ज्ञान के साथ-साथ अनुशासन और विपरीत परिस्थितियों में चुनौतियों से लड़ने का हौसला मिला।

जेन-जी' के सवाल पर साधी चुप्पी

कॉल्विन के विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान उन्होंने अपने दौर की यादें साझा कीं और चुनावी साक्षरता का संदेश दिया। हालांकि, संवाद के दौरान जब मीडिया व छात्रों की ओर से 'जेन-जी' से जुड़े मुद्दों पर सवाल पूछा गया, तो उन्होंने उस पर कोई टिप्पणी नहीं की और मौन साधते हुए आगे बढ़ गए। कॉल्विन तालुकदार्स कॉलेज के कार्यक्रम के बाद मुख्य निर्वाचन आयुक्त इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान के लिए रवाना होंगे।

ठाकुरगंज पुलिस की तत्परता से मूक–बधिर 13 वर्षीय बालक दो घंटे में सकुशल बरामद

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। ठाकुरगंज थाना पुलिस की तत्परता और त्वरित कार्रवाई से घर से बिना बताए निकला 13 वर्षीय मूक-बधिर बालक महज दो घंटे के भीतर सकुशल बरामद कर लिया गया। बालक के सकुशल मिलने के बाद पुलिस ने उसे उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया। बालक की बरामदगी से परिवार ने राहत की सांस ली और लखनऊ पुलिस का आभार जताया।पुलिस के अनुसार 24 अगस्त 2026 को करीब 11:30 बजे कमल सिंह पुत्र जगदीश, निवासी प्रेम विहार गऊघाट, थाना ठाकुरगंज, लखनऊ ने पुलिस को सूचना दी कि उनका करीब 13 वर्षीय बेटा, जो मूक-बधिर है, घर से बिना बताए कहीं चला गया है। परिजनों ने आसपास के इलाकों में काफी तलाश की, लेकिन बालक का कोई पता नहीं चल सका।मामले की गंभीरता को देखते हुए सूचना मिलते ही थाना ठाकुरगंज पुलिस सक्रिय हो

गई और तत्काल बालक की तलाश एवं सुरागरसी-पतारसी शुरू कर दी गई। पुलिस टीम ने बालक के संबंध में उपलब्ध जानकारी जुटाने के साथ ही आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगालने शुरू किए। इसके अलावा अन्य माध्यमों से भी बालक के संभावित रास्तों और ठिकानों के बारे में जानकारी एकत्र की गई।पुलिस की लगातार सक्रियता और त्वरित प्रयासों का परिणाम रहा कि गुमशुदा बालक को करीब दो घंटे के भीतर चारबाग रेलवे स्टेशन के पास, थाना नाका हिंडोला क्षेत्र से सकुशल बरामद कर लिया गया। पुलिस टीम ने बालक को सुरक्षित थाना लाकर आवश्यक कार्रवाई पूरी की और इसके बाद उसे उसके परिजनों के सुपुर्द कर दिया।अपने बच्चे के सकुशल वापस मिलने पर परिजनों ने राहत की सांस ली। परिजनों ने पुलिस की तत्परता और संवेदनशीलता की सराहना करते हुए लखनऊ पुलिस का आभार व्यक्त किया।

घर के बाहर से ऑटो ई-रिक्शा चोरी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

लखनऊ। मोहनलालगंज थाना पुलिस ने घर के बाहर से ऑटो ई-रिक्शा चोरी करने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार कर चोरी किए गए ई-रिक्शा को बरामद कर लिया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ आवश्यक विधिक कार्रवाई पूरी करने के बाद उन्हें न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया।पुलिस के अनुसार 23 अगस्त 2026 को राकेश पुत्र नन्हकऊ, निवासी बैरीसालपुर, थाना मोहनलालगंज, लखनऊ ने थाना मोहनलालगंज में लिखित शिकायत देकर बताया था कि अज्ञात चोरों ने उनके घर के सामने खड़ा ऑटो ई-रिक्शा चोरी कर लिया है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मुकदमा अपराध संख्या 316/2026, धारा 303(2) भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया।घटना के खुलासे और चोरी गए वाहन की बरामदगी के लिए पुलिस उपायुक्त दक्षिणी के निर्देश पर दो पुलिस टीमों का गठन किया गया।

महिला उद्यमिता से आत्मनिर्भरता और सतत विकास को मिलेगी नई दिशा

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल, डिपार्टमेंट ऑफ फूड एंड न्यूट्रीशन तथा सेंटर फॉर इनोवेशन, इनक्यूबेशन एंड इंटरप्रेन्योरशिप के संयुक्त तत्वावधान में 'महिला उद्यमिता' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. सुनीता मिश्रा उपस्थित रहीं, जबकि पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल की प्रो. शैलजा दीक्षित ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम से जुड़ीं। कार्यक्रम में इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल, बीबीएयू के अध्यक्ष प्रो. नवीन कुमार अरोड़ा तथा डिपार्टमेंट ऑफ फूड एंड न्यूट्रीशन की विभागाध्यक्ष प्रो. नीतू सिंह भी मौजूद रहीं।कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर के छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुआ। आयोजन समिति की ओर से शिक्षकों को पौधे भेंट कर सम्मानित किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. नीतू सिंह ने सभी अतिथियों, शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य एवं रूपरेखा की जानकारी दी।मुख्य वक्ता प्रो. सुनीता मिश्रा ने सतत विकास लक्ष्यों की आवश्यकता और उन्हें हासिल करने के प्रभावी तरीकों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि सतत विकास लक्ष्यों को स्थानीय स्तर पर अपनाकर सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने बदलती जीवनशैली का उल्लेख करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी अब स्वस्थ और पौष्टिक आहार के प्रति अधिक जागरूक हो रही है तथा मिलेट्स और माइक्रोग्रीन्स जैसे पोषक खाद्य पदार्थों को अपने भोजन में शामिल कर रही है।

लखनऊ में कौशल प्रशिक्षण केंद्रों पर अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार, भुगतान और परीक्षा में देरी से बढ़ी नाराजगी

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन से जुड़े प्रशिक्षण प्रदाताओं का धैर्य अब जवाब देने लगा है। सोमवार को अलीगंज स्थित कौशल विकास विभाग के कार्यालय के बाहर सैकड़ों प्रशिक्षण पार्टनर्स ने कार्य बहिष्कार करते हुए जोरदार प्रदर्शन किया। प्रशिक्षण प्रदाताओं का आरोप है कि महीनों से भुगतान लंबित है, परीक्षाएं नहीं हो रही हैं और प्रशासनिक व तकनीकी समस्याओं का समाधान नहीं किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश कौशल प्रशिक्षण प्रदाता एसोसिएशन ने अपनी 10 सूत्रीय मांगों को लेकर प्रदेशभर के प्रशिक्षण केंद्रों में अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार का ऐलान किया है। एसोसिएशन का कहना है कि कई बार शिकायत करने के बावजूद विभाग की ओर से समस्याओं के समाधान के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए। अब प्रशिक्षण प्रदाताओं ने लिखित आश्वासन मिलने तक आंदोलन जारी रखने की चेतावनी दी है।

भुगतान को लेकर तय की समयसीमा

प्रशिक्षण प्रदाताओं ने विभाग के सामने भुगतान को लेकर समयसीमा रखी है। उनकी मांग है कि 5 सितंबर तक सभी सत्यापित और एडवांस SSDF बैचों का भुगतान किया जाए। वहीं, 30 सितंबर तक पुराने बैचों का मूल्यांकन पूरा कर लंबित भुगतान का निपटारा करने की मांग की गई है।

इसके अलावा 600 घंटे या उससे कम अवधि वाले बैचों में निर्धारित उपस्थिति पूरी होते ही एडवांस भुगतान की व्यवस्था लागू करने की भी मांग की गई है।

डिबार प्रशिक्षण प्रदाताओं को बहाल करने की मांग

प्रदर्शनकारियों ने डिबार किए गए प्रशिक्षण प्रदाताओं को 25 अगस्त तक बहाल करने की मांग उठाई। साथ ही उपस्थिति नियमों में लचीलापन और बैच एक्सटेंशन की प्रक्रिया में राहत देने की मांग भी की गई है।

एसोसिएशन ने स्पष्ट किया कि जब तक उनकी 10 सूत्रीय मांगों पर लिखित और ठोस आश्वासन नहीं मिलता, तब तक कार्य बहिष्कार और तालाबंदी जारी रहेगी।

पांच साल से परीक्षा का इंतजार कर रहे करीब दो लाख छात्र

प्रशिक्षण पार्टनर विकास माहेश्वरी ने दावा किया कि करीब दो लाख छात्रों की परीक्षाएं पिछले पांच वर्षों से लंबित हैं। उनके मुताबिक, कई छात्रों को प्रशिक्षण के बाद नौकरी तो मिल जाती है, लेकिन प्रमाणपत्र नहीं होने के कारण बाद में उन्हें नौकरी से हटा दिया जाता है।

उनका आरोप है कि जिस संस्था को प्रदेश में परीक्षाएं कराने की जिम्मेदारी दी गई थी, उसका भुगतान सरकार की ओर से रोक दिया गया। इसके चलते संस्था लंबे समय से परीक्षाएं नहीं करा पा रही है। प्रशिक्षण प्रदाताओं का कहना है कि सरकार ने अब तक कोई वैकल्पिक व्यवस्था भी नहीं की है।

रोजगार मेलों के आंकड़ों पर भी सवाल

प्रशिक्षण पार्टनर्स ने रोजगार मेलों की व्यवस्था पर भी सवाल उठाए। उनका कहना है कि कई रोजगार मेले सिर्फ औपचारिकता बनकर रह गए हैं। कंपनियां बुलाए जाने के बावजूद वास्तविक प्लेसमेंट के आंकड़े दावों से काफी अलग हैं।

हालांकि, एक अन्य प्रशिक्षण पार्टनर ने माना कि रोजगार मेलों के जरिए छात्रों को नौकरियां मिलती हैं, लेकिन प्रमाणपत्र नहीं होने के कारण कई युवाओं को बाद में नौकरी गंवानी पड़ती है। प्रशिक्षण प्रदाताओं का कहना है कि इससे सरकार के रोजगार संबंधी दावों और जमीनी हकीकत के बीच अंतर दिखाई देता है।

1100 से ज्यादा ट्रेडों में प्रशिक्षण

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के तहत प्रदेशभर में 1100 से अधिक ट्रेडों में छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण प्रदाताओं का कहना है कि अधिकांश क्षेत्रों में अब तक परीक्षाएं लंबित हैं। पार्टनर्स के साथ हुए एमओयू में समय पर परीक्षा और भुगतान का प्रावधान होने के बावजूद दोनों ही मोर्चों पर देरी का आरोप लगाया जा रहा है।

जिनपिंग की भारत यात्रा-बॉर्डर पर तैनाती और निगरानी बढ़ाने का समय आ गया

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत आने की तैयारी कर रहे हैं। भारत यात्रा के दौरान चीन के राष्ट्रपति 18वें ब्रिक्स सम्मेलन में शामिल होंगे। जिनपिंग इससे पहले वर्ष 2019 में शिखर वार्ता के लिए भारत आएं थे। चीनी राष्ट्रपति के भारत यात्रा के दौरान जाहिर तौर पर दोनों देशों के बीच शीर्ष स्तर पर भी बातचीत होगी। हाल के दिनों में भारत चीन सीमा पर खासकर अरुणाचल प्रदेश को लेकर जो खबरें आ रही है, उसने पूरे देश को चिंतित कर दिया है। बदले माहौल में अब भारत की कोई भी सरकार सिर्फ शांति और व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने के नाम पर पड़ोसी देश की इस तरह की नापाक हरकतों को ठंडे बस्ते में नहीं डाल सकती है। ऐसे में नई दिल्ली में स्वागत की तैयारियों से भी ज्यादा जरूरी हो जाता है भारत-चीन सीमा पर सैनिकों को पूरे साजो-सामान के साथ 24 घंटे रेडी मोड में रखना। चीन का इतिहास भी यही बताता है कि भारत को अब और ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है।

भारत-चीन संबंधों के बीच सबसे बड़ी विडंबना शीर्ष नेताओं के दौरे के दौरान या दौरे के आसपास ही शुरू होती है। आमतौर पर जब भी किसी दो देशों के बीच शीर्ष स्तर पर यात्रा की कोई योजना बनती है तो दोनों ही देश, इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि यात्रा से पहले और यात्रा के दौरान तो कम से कम कहीं कोई तनाव न पैदा हो। लेकिन चीन इसके बिल्कुल उल्टा करता है। चीन का इतिहास यह बताता है कि भारत की तरफ से संबंध सुधारने के लिए जब भी शीर्ष स्तर पर कोई नेता चीन जाता है या फिर भारत के निमंत्रण पर जब भी चीन से कोई शीर्ष नेता भारत आता है तो अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और राजनयिक शिष्टाचार को पूरी तरह से धत्ता बताते हुए चीन की सेना सीमा पर खुराफात शुरू कर देती है। एक तरफ शीर्ष स्तर पर बातचीत, शांति और व्यापारिक संबंधों के ढोल बज रहे होते हैं तो वहीं दूसरी तरफ चीन की सेना भारत के क्षेत्र में जबरदस्ती घुसपैठ करने और भारतीय सेना से लड़ती-भिड़ती नज़र आती है। आपको बता दें कि, चीन की सेना पाकिस्तानी सेना की तरह बेलगाम नहीं है यानी चीन की सेना जो कुछ भी करती है वह राष्ट्रपति की मंजूरी से ही करती है। वैसे तो शीर्ष स्तर पर यात्राओं के दौरान चीन की इस तरह की हरकतों का लंबा इतिहास रहा है। लेकिन आपके सामने कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को उदाहरण के तौर पर रख देते हैं।

वर्ष 2003 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा के दौरान ही चीनी सेना की एक टुकड़ी ने अरुणाचल प्रदेश के अपर सुबनसिरी जिले के असफीला इलाके में LAC पार करके भारतीय सीमा में न केवल घुसपैठ किया था बल्कि भारतीय सैनिकों की एक छोटी सी टुकड़ी से उनके हथियार तक छीन लिए थे। चीनी सेना ने इससे भी बड़ी नापाक हरकत वर्ष 2013 में अपने ही प्रधानमंत्री ली केकियांग के भारत दौरे से पहले की थी। मनमोहन सिंह सरकार के दौरान वर्ष 2013 में चीनी प्रधानमंत्री की भारत यात्रा से पहले PLA यानी चीनी सेना पूर्वी लद्दाख (भारतीय क्षेत्र) में 19 किलोमीटर तक न केवल अंदर घुस आई थी बल्कि वहां तंबू लगाकर कब्जा भी कर लिया था। दोनों देशों की सेनाएं आमने-सामने आ गई थी और लगभग 20 दिनों तक यह गतिरोध बना रहा था।

नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद वर्ष 2014 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत यात्रा पर आएं। जिनपिंग के भारत पहुंचने से महज कुछ घंटे पहले ही चीन की सेना ने लद्दाख में घुसपैठ कर, अवैध तरीके से सड़क बनाना शुरू कर दिया। यहां भी दोनों देशों की सेनाएं लगभग दो सप्ताह तक आमने-सामने खड़ी रहीं। इस तरह के अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं जब भारत और चीन के शीर्ष नेता बातचीत कर रहे थे या बातचीत करने की तैयारी कर रहे थे, ठीक उसी समय चीन की सेना नापाक हरकतें कर रही थी। ऐसे में बड़ा सवाल तो यही खड़ा हो रहा है कि क्या चीन सितंबर के महीने में बॉर्डर पर फिर से कोई बड़ी खुराफात करने की योजना तो नहीं बना रहा है ? यह सवाल इसलिए खड़ा हो रहा है क्योंकि भारत में 12-13 सितंबर को 18वां ब्रिक्स सम्मेलन होने जा रहा है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इसमें शामिल होने के लिए भारत आएंगे। चीन के राष्ट्रपति के भी इस सम्मेलन में आने की तैयारियां चल रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भारत के विदेश मंत्रालय के सूत्र यह बता रहे हैं कि जिनपिंग के दौरे की अभी आधिकारिक तौर पर औपचारिक सूचना भले ही न मिली हो लेकिन एडवांस टीमों के दौरे और बाकी तैयारियों से यह लग रहा है कि वह भारत आ सकते हैं। अगर ऐसा है तो भारत और चीन की सीमा पर चौकसी को और ज्यादा बढ़ाने का समय आ गया है।

विपक्ष ने सिर्फ विरोध करने के लिए विरोध किया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भले शुक्रवार की देर रात को जारी वीडियो में कहा हो कि वे समाज में विद्यमान आक्रोश को समझ रहे हैं।

एस. सुनील

पूरी प्रक्रिया में कुछ भी ऐसा नहीं था, जिसका विरोध किया जाना चाहिए। परंतु विपक्ष ने सिर्फ विरोध करने के लिए विरोध किया इसके पीछे एक कारण यह भी था कि विपक्षी पार्टियां लगभग सारे समय छात्रों के आंदोलन से दूर रही थीं। जब उनको लगा कि छात्रों के अंदर आक्रोश है तब तक देर हो गई थी। उसी की भरपाई करने के लिए विपक्षी पार्टियां ओवरटाइम कर रही हैं।

संत कवि रहीम ने लिखा है, 'क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात। का रहिमन हरि घटयो, जो भृगु मारी लात। इसका अर्थ है कि क्षमा करना बड़े लोगों की शोभा है। उन्होंने अपने इस दोहे में एक प्राचीन हिंदू कथा का हवाला दिया है, जिसके मुताबिक भृगु ऋषि एक बार भगवान विष्णु से मिलने गए। उस समय भगवान विश्राम कर रहे थे। इससे नाराज भृगु ने उनकी छाती पर लात मार दिया। इसके बावजूद निद्रा से उठे भगवान विष्णु ने भृगु ऋषि को प्रणाम किया और उनकी बात सुनी। कहते हैं कि इससे नाराज होकर मां लक्ष्मी पृथ्वी पर आ गई थीं और उन्हें खोजते हुए विष्णु भगवान भी पृथ्वी पर आए। तिरूमाला की पहाड़ियों में उनको मां लक्ष्मी मिलीं। वहीं तिरुपति के रूप में भगवान विराजमान हैं, जो आज एक प्रसिद्ध तीर्थ है।

बहरहाल, रहीम का दोहा और यह प्रसंग बताने का उद्देश्य यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बड़प्पन दिखाया है। उन्होंने एक वीडियो जारी किया, जिसमें अपनी पीड़ा भी जाहिर की लेकिन साथ ही उनके और उनकी मां के लिए अपमानजनक शब्द कहने वाले छात्रों और युवाओं को 'गुमराह बच्चे बताते हुए उनको माफ भी कर दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि वे नहीं चाहते हैं कि बच्चों को परेशानी हो और उन्हें कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ें। इसलिए उन्होंने खुद भी बच्चों को माफ किया और समाज से भी अपील करते हुए कहा कि वे बच्चों के प्रति ऐसा ही सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाएं। प्रधानमंत्री ने एक अभिभावक के रूप में बच्चों के भविष्य की चिंता जताई और उन्हें सही राह दिखाने की आवश्यकता भी बताई।

प्रधानमंत्री के वीडियो का एक पहलू तो यह है, जिसमें वे एक अभिभावक के तौर पर बच्चों के भविष्य की चिंता करते हुए उनको माफ कर रहे हैं और सही रास्ते पर लाने की आवश्यकता बता रहे हैं, जबकि दूसरा पहलू एक संवेदनशील प्रधानमंत्री के तौर पर यह स्वीकार करने का है वे समाज में विद्यमान आक्रोश को समझ रहे हैं। यह साधारण बात नहीं है कि प्रधानमंत्री ने स्वीकार किया कि समाज में आक्रोश है। प्रधानमंत्री ने यह सुनिश्चित किया कि इस आक्रोश की अभिव्यक्ति के तौर पर छात्रों और युवाओं ने जंतर मंतर पर जो कुछ कहा या किया इसके लिए उनको सजा न मिले, बल्कि उनको यह संदेश जाए कि सरकार ने उनके सरोकारों को समझा है। तभी प्रदर्शनकारी छात्रों से किए गए वादे के मुताबिक सरकार ने हर जगह मुकदमे वापस किए हैं। छात्रों पर दर्ज एफआईआर रद्द की गई है। प्रधानमंत्री ने अपनी पार्टी के लोगों को भी यह संदेश दिया कि वे सोशल मीडिया में या समाज में सार्वजनिक जगहों पर बच्चों को सजा देने या परेशान करने वाला कोई काम नहीं करें। इस पहल से छात्रों व युवाओं का विश्वास बहाल होगा। ध्यान रहे भारतीय संस्कृति में क्षमा को बहुत महत्व दिया गया है। प्रधानमंत्री की ओर से छात्रों को क्षमा करने का भाव दिखाने के बाद नोएडा की एक छात्रा का वीडियो वायरल हुआ, जिसने जंतर मंतर पर प्रधानमंत्री के लिए अपशब्द कहे थे। उस नाबालिग लड़की ने अपनी बातों पर अफसोस जताया। ग्लानि का भाव उसकी बातों से स्पष्ट झलक रहा था। निश्चित रूप से प्रधानमंत्री की पहल के बाद ऐसा भाव लाखों युवाओं के मन में आया होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भले शुक्रवार की देर रात को जारी वीडियो में कहा हो कि वे समाज में विद्यमान आक्रोश को समझ रहे हैं। लेकिन असल में वे इसे पहले ही समझ गए थे और तभी नीतिगत पहल का ऐलान कर दिया था ताकि लोगों का आक्रोश समाप्त हो और व्यवस्था में विश्वास बहाल हो। उन्होंने इसकी शुरुआत गुरुवार, 23 जुलाई को ही कर दी थी, जिस दिन पेपर लीक रोकने के लिए कठोर सजा के प्रावधान वाला बिल लाने की घोषणा की थी। उसके तुरंत बाद 'पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रीवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) अमेंडमेंट बिल, 2026 को कैबिनेट ने मंजूरी दी। सोमवार को यह बिल लोकसभा में पेश किया गया। मंगलवार और बुधवार की चर्चा के बाद इसे लोकसभा ने मंजूरी दी और गुरुवार को राज्यसभा से बिल मंजूर हो गया। यह संयोग है कि गुरुवार की शाम को ही प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की।

छात्रों, युवाओं और उनके अभिभावकों के सरोकारों को समझते हुए प्रधानमंत्री ने नंदन नीलेकणी की अध्यक्षता में एक उच्चाधिकार प्राप्त कमेटी का गठन किया। यह कमेटी परीक्षा प्रणाली की कमियों को पहचान कर उसमें सुधार के सुझाव देगी। इस कमेटी में इसरो के पूर्व प्रमुख एस सोमनाथ और आईआईटी मद्रास के निदेशक वी कामकोटि भी शामिल हैं। दुर्भाग्य की बात है कि विपक्ष ने इसका समर्थन करने की बजाय इसका भी विरोध शुरू कर दिया। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में आधार की ऑथोरिटी के प्रमुख रहे नंदन नीलेकणी को इस कमेटी का अध्यक्ष बनाया है लेकिन कांग्रेस की सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा को लग रहा है कि नीलेकणी सिर्फ एक आईटी कंपनी के मालिक हैं। सरकार की इस बड़ी पहल को कमतर बताने के मकसद से उन्होंने देश में आईटी क्रांति से जुड़े एक प्रतिष्ठित उद्यमी, सम्मानित समाजसेवी, विजनरी लीडर और आधार क्रांति के सूत्रधार नंदन नीलेकणी का तो अपमान किया ही अपनी ही सरकार के किए काम को भी कमतर बना दिया। इसी तरह उन्होंने वी कामकोटि को गोमूत्र विशेषज्ञ कह कर मजाक उड़ाया। सबको पता है कि कामकोटि भारत सरकार के 'शक्ति प्रोजेक्ट के प्रमुख रहे हैं, जिसके तहत सेमीकंडक्टर और एआई की आधारशिला को मजबूत किया गया था। प्रियंका गांधी वाड्रा ने जो कहा कि वह सिर्फ सरकार की पहल का विरोध नहीं है, बल्कि भारतीय जीवन मूल्यों से जुड़े प्रतीकों का मजाक उड़ाने की मानसिकता को भी दिखाता है। पता नहीं कांग्रेस के लोगों को सनातन से जुड़े प्रतीकों से इतनी नफरत क्यों है? बाद में देश के दो सौ से ज्यादा शिक्षाविदों और कुलपतियों व पूर्व कुलपतियों ने एक खुला पत्र लिख कर प्रियंका गांधी वाड्रा की कही गई बात पर आपत्ति दर्ज कराई। बहरहाल, पेपर लीक पर कठोर सजा के प्रावधान करने वाला बिल पास हो गया है। अब देश में कहीं भी पेपर लीक होने पर उसकी जांच विशेष जांच टीम यानी एसआईटी करेगी और दो महीने में जांच पूरी करेगी। इसके बाद तीन महीने के भीतर फास्ट ट्रैक कोर्ट में इसकी सुनवाई पूरी होगी। उसके बाद एक महीने का समय होगा हाई कोर्ट में अपील करने के लिए। हाई कोर्ट में भी इस मामले की सुनवाई तीन महीने में पूरी करने का प्रावधान है।

व्यंग्य

नौकरी की मजबूरी

भारतीय नाविकों के सामने भी नौकरी की मजबूरी है, जिससे जहाज मालिकों का निर्देश मानने के लिए वे विवश बने हुए हैं। जबकि फारस की खाड़ी, लाल सागर, और काला सागर में जोखिम बढ़ता जा रहा है।

लाल सागर में यमन के पास भारतीय झंडे वाला एक व्यावसायिक जहाज डूब गया। राहत की बात है कि जहाज पर सवार 14 नाविकों को बचा लिया गया, जिनमें 13 भारतीय हैं। भारतीय जहाज एसएसवी फैज नूर ओलिया पर यमन के हुदैदा/ मोखा बंदरगाह के पास मिसाइल अथवा ड्रोन से हमला हुआ। हमला किसने किया, तुरंत यह मालूम नहीं हो सका, लेकिन यमन के पास इस जलमार्ग में जहाजों को अक्सर अंसारुल्लाह (हुती) विद्रोही निशाना बनाते रहे हैं। अंसारुल्लाह ने लाल सागर में मौजूद बाब-ए-मंदाब जल मार्ग को आम नौवहन के लिए बंद कर रखा है। इसके पहले खाड़ी में पांच महीनों से जारी युद्ध के दौरान होरमुज जलडमरूमध्य के आसपास जहाजों पर हुए हमलों में कम-से-कम 14 भारतीय नाविक मारे जा चुके हैं।

इस बीच पिछले महीने काला सागर से गुजरने का प्रयास भी भारतीय नाविकों के लिए जानलेवा साबित हुआ। बीते 18 जुलाई और 19 जुलाई को दो हमलों में पांच भारतीय नाविक मारे गए। ये हमले यूक्रेन ने किए। ऐसे मामलों में भारत सरकार की प्रतिक्रिया ₹कड़ी निंदा₹ करने तक सीमित रही है। पिछले महीने यह खबर जरूर मीडिया में आई थी कि भारत सरकार ने शिपिंग कंपनियों को खतरनाक इलाकों में जाने वाले जहाजों में भारतीय नाविकों की ड्यूटी ना लगाने का निर्देश दिया है। ऐसे कथित निर्देश के औचित्य पर तभी कई सवाल उठे थे। बहरहाल, अब यह साफ हो चुका है कि अगर सचमुच वैसा कोई दिशा-निर्देश दिया गया था, तो वह बेअसर साबित हुआ है।

तमाम नाविकों की तरह भारतीय नाविकों के सामने भी नौकरी की मजबूरी है, जिससे जहाज मालिकों का निर्देश मानने के लिए वे विवश हैं। जबकि फारस की खाड़ी, लाल सागर, और काला सागर में जोखिम बढ़ता जा रहा है। अमेरिका और ईरान के युद्ध में अब सबसे बड़ा मसला होरमुज का ही रह गया है, जिस पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए ईरान अडिग है। उधर हूतियों और सऊदी अरब के बीच लड़ाई छिडने से लाल सागर में भी खतरा बढ़ा है। इन सबके बीच भारतीय नाविकों को कैसे बचाया जाए, यह सवाल रोज अधिक बड़ा होता चला गया है।

ब्लॉग

बेटी पढ़ाओ ने भविष्य का रास्ता खोला

श्रुति व्यास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समझते हैं कि राजनीति केवल नीतियों से नहीं, कथाओं से भी चलती है। प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने भारत को जो सबसे प्रभावशाली कहानी सुनाई, वह बेटियों की कहानी थी। जनवरी 2015 में पानीपत से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान शुरू करते हुए वे केवल कन्या भ्रूण हत्या रोकने की बात नहीं कर रहे थे। वे भारतीय समाज की उस पुरानी सोच को चुनौती दे रहे थे, जिसमें बेटी को पराया धन माना जाता था। उनका संदेश स्पष्ट था—बेटी को बचाइए, पढ़ाइए, अवसर दीजिए और उसे बराबरी का नागरिक बनाइए।

उस समय देश निर्भया आंदोलन की स्मृतियों से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था। महिलाओं ने पहली बार इतनी बड़ी संख्या में सड़कों पर उतर कर केवल न्याय नहीं, बल्कि निर्भय होकर सार्वजनिक जीवन जीने का अधिकार भी मांगा था। ऐसे समय नरेंद्र मोदी एक ऐसे नेता की तरह उभरे, जिन्होंने उस भय को भी समझा और उससे आगे का सपना भी दिखाया। बेटी बचाओ ने सुरक्षा की चिंता को संबोधित किया, बेटी पढ़ाओ ने भविष्य का रास्ता खोला। बेटी केवल संरक्षण की पात्र नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की सहभागी होगी। यही उस अभियान की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति थी।

यही कारण था कि अगले वर्षों में महिलाओं का बड़ा वर्ग मोदी के साथ खड़ा दिखाई दिया। उज्ज्वला, शौचालय, जनधन और दूसरी कल्याणकारी योजनाओं ने उस भरोसे को मजबूत अवश्य किया, लेकिन रिश्ता केवल योजनाओं का नहीं था। मोदी ने महिलाओं को नए भारत की कहानी का सक्रिय पात्र बनाया था, केवल लाभार्थी नहीं।

लेकिन हर कहानी का एक दूसरा अध्याय भी होता है।

बारह वर्ष बाद वही बेटियां बड़ी हो चुकी हैं। शिक्षा ने उन्हें केवल डिग्री नहीं दी; उसने उन्हें अपनी राय भी दी है। और स्वतंत्र राय किसी भी सरकार के नियंत्रण में नहीं होती। पिछले सप्ताह जब अनेक छात्राओं और युवाओं ने प्रधानमंत्री के प्रति खुलकर असहमति व्यक्त की, तब बहस केवल उनकी भाषा पर नहीं हुई। असली प्रश्न यह था कि सत्ता असहमति का सामना कैसे करती है। यहीं बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की कहानी पहली बार अपने ही नए पात्रों से टकराती दिखाई दे रही है।

इसके केंद्र में कहानी का एक मार्मिक चेहरा आज पंद्रह वर्ष की रुचिका सिंह है। उसका पहला वीडियो इसलिए वायरल हुआ क्योंकि उसने प्रधानमंत्री के लिए बेहद अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया था। भाषा निश्चित ही आलोचना, भर्त्सना के योग्य थी। उसे समझाया जा सकता था, डांटा जा सकता था। लेकिन तीन धाराओं में एफआईआर दर्ज होना बहस को भाषा से उठाकर सत्ता और भय के प्रश्न तक ले गया है।

असल दृश्य पहला वीडियो नहीं था। दूसरा था। कुछ ही दिनों बाद सामने आई वही लड़की पहचान में नहीं आती थी। हाथ जुड़े हुए। आंखों के नीचे गहरे काले घेरे। निगाहें झुकी हुईं। आवाज़ बुझी हुई। जिस चेहरे पर कुछ दिन पहले किशोर उम्र की बेलौस चुनौती दिखाई देती थी, वहां अब भय साफ़ पढ़ा जा सकता था। पहले वीडियो में एक ऐसी बच्ची थी जिसे अपनी सीमा का अंदाज़ा नहीं था। दूसरे वीडियो में वही बच्ची किसी अदृश्य सीमा को पार कर देने के डर से कांपती दिखाई दी।

बच्चे को अनुशासन सिखाना और उसे भय सिखा देना, दोनों अलग बातें हैं। कैमरा कभी-कभी दोनों के बीच का अंतर छिपा देता है, लेकिन समाज को उसे पहचानना चाहिए।

रुचिका अकेली नहीं थी। श्रद्धा भी थी। उसने रैपिड एक्शन फोर्स का मज़ाक उड़ाते हुए ऐसी भाषा इस्तेमाल की, जिसने सोशल मीडिया पर उसके खिलाफ़ गालियों का तूफ़ान खड़ा कर दिया। उसने वीडियो हटा लिया। फिर माफ़ीनामा भी जारी किया। उसके चेहरे पर भी वही थकान थी, वही टूटन, जो रुचिका के दूसरे वीडियो में दिखाई दी।

लेकिन असली बात बाद में सामने आई।

बीबीसी हिंदी से बातचीत में श्रद्धा ने कहा कि जंतर-मंतर पर हजारों अनजान लोगों, लड़कों और प्रदर्शनकारियों के बीच बैठकर उसे एक बार भी डर नहीं लगा। वह बहस करती रही, नारे लगाती रही, रील बनाती रही। लेकिन जब उसने मोबाइल उठाया और स्क्रीन के पीछे बैठे लोगों की दुनिया देखी, तब उसका साहस टूट गया। यह कहते-कहते उसकी आवाज़ भर्रा गई कि सड़क पर मौजूद अजनबियों ने नहीं, बल्कि इंटरनेट पर बैठे लोगों ने उसे सबसे ज़्यादा डराया।

यहीं पिछले एक दशक का सबसे बड़ा सामाजिक परिवर्तन दिखाई देता है। 2012 में निर्भया महिलाओं के लिए सड़क भय का प्रतीक थी और घर अपेक्षाकृत सुरक्षित स्थान।

2026 में तस्वीर उलट गई। जंतर-मंतर की सड़क पर युवतियां देर रात तक बैठीं, हंसीं, बहस की, गीत गाए और उन्हें अपने आसपास बैठे हजारों लोगों के बीच लगभग सुरक्षा का एहसास हुआ। वहां शोर था, संगीत था, मीम थे, हंसी थी, कभी फूहड़पन भी था, लेकिन उसके भीतर अपनी आवाज़ खोजने का उत्साह भी था। जीवन के पहले आंदोलन में कोई तैयार राजनीतिक दर्शन लेकर नहीं आता। लोग देखते हैं, सुनते हैं, बहस करते हैं और धीरे-धीरे समझते हैं कि लोकतंत्र केवल मतदान का अधिकार नहीं, बल्कि बोलने का अधिकार भी है।

लेकिन घर लौटने के बाद, अपने कमरे में, अपने मोबाइल के सामने वे अकेली पड़ गईं।

वहीं से बलात्कार की धमकियां आईं। वहीं से हत्या की धमकियां आईं। वहीं से माता-पिता को निशाना बनाने वाले संदेश आने लगे। यह केवल सोशल मीडिया की गंदगी नहीं है। यह लोकतंत्र की नई चुनौती है।

जिस राजनीति ने कभी महिलाओं की सुरक्षा को अपना सबसे बड़ा नैतिक प्रश्न बनाया था, उसी दौर में आज राजनीतिक असहमति रखने वाली युवतियों को चुप कराने के लिए यौन हिंसा की धमकी सबसे प्रभावी हथियार बनती जा रही है। यह केवल कुछ ट्रोल अकाउंट्स का मामला नहीं है। यह उस सार्वजनिक संस्कृति का आईना है, जिसमें असहमति का जवाब तर्क से कम और डर से अधिक दिया जाने लगा है।

आज इंटरनेट सड़क से अलग कोई दुनिया नहीं है। आधी रात को मोबाइल पर मिला बलात्कार का संदेश अगले दिन किसी लड़की के कदमों का आत्मविश्वास बदल देता है। माता-पिता के खिलाफ़ आई धमकी तय करती है कि वह अगली रैली में जाएगी या नहीं। हजारों गालियां मिलकर वह काम कर देती हैं, जो पुलिस की लाठियां या बैरिकेड भी नहीं कर पाते। इंसान स्वयं अपनी आवाज़ पर पहरा लगाने लगता है।

यही सबसे गहरी चोट है।

आज भारत की एक नई पीढ़ी सामने है। वह पढ़ी-लिखी है, इंटरनेट के साथ बड़ी हुई है, राजनीति पर राय रखती है और सत्ता से सहज भयभीत नहीं होती। वह रील बनाती है, मीम बनाती है, व्यंग्य करती है। कभी उसकी भाषा मर्यादित होती है, कभी नहीं; कभी वह सही होती है, कभी गलत। लेकिन उससे पहले की पीढ़ियों की तरह उसके भीतर केवल पद के कारण पैदा होने वाली सहज श्रद्धा नहीं है।

रुचिका की कहानी है तो उर्वशी पलांदुरकर की भी कहानी है। जब भाजपा छत्तीसगढ़ ने उसका नृत्य वाला वीडियो साझा कर जेन-ज़ी की मानसिकता पर सवाल उठाने की कोशिश की, तब उर्वशी ने शर्मिंदा होने से इनकार कर दिया। उसने व्यंग्य का जवाब व्यंग्य से दिया। पहली नज़र में रुचिका और उर्वशी अलग दिखती हैं—एक डर गई, दूसरी नहीं। लेकिन लोकतंत्र की दृष्टि से दोनों एक ही परिवर्तन की अभिव्यक्तियां हैं।

दोनों बेटी पढ़ाओ की विफलता नहीं, उसकी सबसे स्वाभाविक सफलता हैं। क्योंकि जिस दिन आप किसी बेटी को शिक्षा देते हैं, उसी दिन यह अधिकार भी छोड़ देते हैं कि वह आगे चलकर क्या सोचेगी? उसे सपने देखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, लेकिन उसके सपनों और उसकी राय की सीमा तय नहीं की जा सकती। उसकी निर्भीकता का उत्सव तब तक ही नहीं मनाया जा सकता, जब तक वह आपकी प्रशंसा करे; उसकी असहमति भी उसी निर्भीकता का हिस्सा है।

इक्कीसवीं सदी की बेटी तैयार करके उससे अठारहवीं सदी जैसी आज्ञाकारिता की उम्मीद नहीं की जा सकती। शायद हर सफल कहानीकार की नियति यही होती है। एक दिन उसके पात्र बड़े हो जाते हैं। वे उसकी कहानी को दोहराते नहीं, उसमें अपने अध्याय जोड़ते हैं। सरकारें नागरिकों को शिक्षित कर सकती हैं, अवसर दे सकती हैं और आत्मविश्वास जगा सकती हैं, लेकिन वही आत्मविश्वास एक दिन स्वतंत्र राजनीतिक चेतना में बदल जाता है।

इसलिए पंद्रह वर्ष की किसी लड़की की अभद्र भाषा प्रधानमंत्री को अप्रिय लग सकती है। उसकी आलोचना भी होनी चाहिए। लेकिन उससे कहीं अधिक चिंता उस भय की होनी चाहिए, जो कुछ दिनों बाद उसी लड़की की आंखों में उतर आया।

आख़िर कहानी बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की थी। उसमें कहीं यह वादा नहीं था कि पढ़ी-लिखी बेटी हमेशा कहानीकार से सहमत ही रहेगी। उलटे शायद उसकी सबसे बड़ी सफलता यही है कि अब वह अपनी कहानी स्वयं लिखना चाहती है।

यामानाशी-यूपी: नई औद्योगिक क्रांति की दस्तक, बदलेगी उत्तर प्रदेश की तस्वीर

आर्यावर्त संवाददाता

गोरखपुर। जापान के औद्योगिक दर्शन को समझाने के लिए एक शब्द बहुत इस्तेमाल किया जाता है और वह है- काइजन। यह जापानी भाषा के दो अक्षरों 'काई' (परिवर्तन) और 'जेन' (अच्छाई) से मिलकर बना है। शाब्दिक अर्थ है- 'बेहतरी के लिए परिवर्तन। यह हर कार्यस्थल पर, हर कर्मचारी द्वारा किए जाने वाले छोटे-छोटे, निरंतर सुधारों की एक जीवनशैली है जो जापान को अनुशासन, सटीकता और तकनीकी उत्कृष्टता का पर्याय बनाती है और अब यामानाशी प्रांत के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश ने भी ऐसी ही विशिष्टता हासिल करने की ओर कदम बढ़ाया है।

यूपी-यामानाशी प्रांत की साझेदारी में भूगोल, नीति और अवसर एक साथ एक ही पॉइंट पर खड़े दिखाई देते हैं। एक ओर जापान है, जिसने काईजन का आदर्श सूत्र अपनाकर सेकेंड वर्ल्ड वॉर के मलबे से उठकर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था खड़ी की। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश है, 24 करोड़ से अधिक आबादी वाला, युवाओं से भरा और महत्वाकांक्षाओं से लबरेज राज्य, जो एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का सपना देख रहा है। यह सटीकता और संभावना का मिलन है, जो एक बड़े लक्ष्य की नींव है।

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद जापान के काईजन प्रबंधन-दर्शन को टोयोटा जैसी कंपनियों ने अपनी कार्य-संस्कृति का मूल आधार बनाया। काईजन की सबसे बड़ी खूबी यही है कि यह सोच और अनुशासन में बदलाव मांगता है। वेस्ट को कम करना, समय की बचत करना, और गुणवत्ता को हर कदम पर प्राथमिकता देना। यही भावना मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यामानाशी प्रांत के साथ मिलकर उत्तर प्रदेश में लाना चाहते हैं।

सेमीकंडक्टर से सप्लाई चेन तक

जापान की पहचान वैश्विक स्तर पर सेमीकंडक्टर, ऑटोमेशन और ग्रीन एनर्जी जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में नेतृत्वकर्ता की रही है। यह संयोग नहीं है कि उत्तर प्रदेश में नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना एक्सप्रेसवे इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी (YEIDA) का क्षेत्र आज इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग के एक सशक्त क्लस्टर के रूप में उभर रहा है। अगर जापानी दिग्गज कंपनियां यहां सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन, असेंबली यूनिट्स और माइक्रो-चिप डिजाइनिंग में निवेश करती हैं, तो यह एक आत्मनिर्भर सप्लाई चेन के निर्माण की शुरुआत होगी जो कच्चे माल से लेकर तैयार प्रोडक्ट तक की पूरी प्रक्रिया को राज्य की सीमाओं के भीतर समेट लेगी। इससे न केवल प्रत्यक्ष रोजगार पैदा होंगे, बल्कि सैकड़ों सहायक (एंसिलरी) यूनिट्स भी जन्म लेंगी, जो स्थानीय एंटरप्रेन्योरशिप को नई ऊर्जा देंगी।

ग्रीन एनर्जी और मोबिलिटी

नेट-जीरो के लक्ष्य में जापान की ग्रीन हाइड्रोजन तकनीक और इलेक्ट्रिक व्हीकल बैटरी समाधान एक निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। उत्तर प्रदेश, जो पहले से ही विजनरी सीएम योगी के नेतृत्व में अपने ऊर्जा और परिवहन क्षेत्र को आधुनिक बनाने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहा है, इन तकनीकों का लाभ उठाकर एक बड़ी छलांग लगा सकता है। इसी तरह इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन, रोबोटिक्स और प्रिसिजन मैन्युफैक्चरिंग में जापान की विशेषज्ञता स्थानीय मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स की गुणवत्ता को वैश्विक मानकों तक ले जाने में मददगार साबित हो सकती है। यीडा क्षेत्र में समर्पित जापानी इंडस्ट्रियल टाउनशिप की स्थापना इसी दिशा में उठाया गया एक ठोस और दूरदर्शी कदम है, जो उच्च-तकनीक आधारित एमएसएमई और सहायक उद्योगों के लिए एक संपूर्ण, एकीकृत इकोसिस्टम प्रदान करेगी।

कौशल विकास: तकनीक से पहले हाथों का हुनर

कोई भी उन्नत तकनीक तभी सार्थक साबित होती है, जब उसे संचालित करने वाला कार्यबल उतना ही दक्ष और प्रशिक्षित हो। यही वह बिंदु है, जहां जापान का कौशल विकास मॉडल उत्तर प्रदेश के युवाओं के लिए वास्तव में गेम-चेंजर साबित हो सकता है। जापानी कंपनियां राज्य में 'इंस्टिट्यूट फॉर मैन्युफैक्चरिंग' और 'इंस्टिट्यूट फॉर स्किल्स' जैसे स्पेशलाइज्ड ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट स्थापित कर सकती हैं। इन केंद्रों के माध्यम से युवाओं को जापानी कार्य-संस्कृति के मूल तत्व भी सिखाए जा सकते हैं। काईजन यानी निरंतर सुधार की भावना। अगर यह दर्शन उत्तर प्रदेश के लाखों युवाओं के डीएनए में उतर जाए, तो राज्य का श्रमबल न केवल घरेलू, बल्कि ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग मैप पर भी अपनी अलग पहचान बना सकेगा।

नवाचार : शिक्षा और उद्योग का संगम

पूरे परिवर्तन को स्थायित्व तभी मिलेगा, जब यह राज्य की शैक्षणिक व्यवस्था की जड़ों तक पहुंचे। आईआईटी कानपुर, आईआईटी-बीएचयू जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ-साथ राज्यभर के आईटीआई और पॉलीटेक्निक कॉलेजों के साथ जापानी कंपनियों का सीधा जुड़ाव एक क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है। इस तरह के उद्योग-अकादमिक सहयोग से रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मेकाट्रोनिक्स जैसे अत्याधुनिक विषयों में स्पेशलाइज्ड कोर्स तैयार किए जा सकते हैं, जो पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था और उद्योग जगत की वास्तविक जरूरतों के बीच की खाई को पाटेंगे। इसके साथ ही, तकनीकी प्रशिक्षण के समानांतर यदि जापानी भाषा और सांस्कृतिक समझ को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए, तो यह उत्तर प्रदेश के युवाओं के लिए न केवल घरेलू स्तर पर, बल्कि जापान और अन्य अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी रोजगार के नए और बेहतर द्वार खोलेगा। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि विश्वास और दीर्घकालिक साझेदारी की नींव भी होती है।

बुनियादी ढांचा: निवेश के लिए तैयार जमीन

बड़े निवेश के लिए सबसे पहली शर्त होती है भरोसेमंद और आधुनिक बुनियादी ढांचा। उत्तर प्रदेश में तेजी से मजबूत होता लॉजिस्टिक्स नेटवर्क, विश्वस्तरीय एक्सप्रेसवे, आधुनिक औद्योगिक अवसंरचना और बेहतर होती प्रशासनिक व्यवस्था इस दिशा में राज्य को एक स्वाभाविक बढ़त देती है। जापानी निवेशक, जो निर्णय लेने में सतर्कता और दीर्घकालिक स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं, उनके लिए यह वातावरण अत्यंत आकर्षक है। जब बुनियादी ढांचे की मजबूती, नीतिगत स्पष्टता और तकनीकी साझेदारी की इच्छाशक्ति एक साथ मिलती हैं, तो निवेश केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि धरातल पर वास्तविक परियोजनाओं का रूप लेता है। यूपी-जापान निवेश सम्मेलन राज्य के सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने में दीर्घकालिक बदलाव लाने की क्षमता रखता है। जब जापान की गुणवत्ता, अनुशासन और तकनीकी उत्कृष्टता, उत्तर प्रदेश की विशाल क्षमता, विस्तृत बाजार और ऊर्जावान युवा शक्ति से मिलती है, तो यह साझेदारी लाखों युवाओं को उच्च-कौशल, उच्च-तकनीकी रोजगार से जोड़ने का माध्यम बनती है। गांवों और कस्बों तक समृद्धि पहुंचाती है, और अंत में उत्तर प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के और करीब ले जाती है।

ट्रेन के सामने कूदकर अधेड़ न किया आत्महत्या

जौनपुर। भंडारी रेलवे स्टेशन के आउटर सिग्नल के पास सोमवार सुबह करीब आठ बजे एक अधेड़ व्यक्ति ने ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली। ट्रेन की चपेट में आने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही जीआरपी के जवान मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू की। सुबह प्लेटफॉर्म नंबर एक से लखनऊ की ओर जाने वाली सवारी गाड़ी स्टेशन से रवाना होकर आउटर सिग्नल के पास पहुंची ही थी। इसी दौरान रेल पटरी के किनारे खड़े अधेड़ ने अचानक ट्रेन के सामने छलांग लगा दी। ट्रेन की चपेट में आने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई।घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। सूचना मिलने पर भंडारी जंक्शन जीआरपी के जवान मौके पर पहुंचे। पुलिस ने मृतक की तलाशी ली तो उसके पास आधार कार्ड मिला। आधार कार्ड के आधार पर मृतक की पहचान राजेश कुमार (47) के रूप में हुई।

सुल्तानपुर में एंटी करप्शन टीम की एंट्री, अब रिश्वतखोरों पर कसेगा शिकंजा

आर्यावर्त संवाददाता

बल्दीराय/सुलतानपुर। सरकारी काम के बदले रिश्वत मांगने वाले अधिकारी और कर्मचारियों की अब मुश्किलें बढ़ सकती हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से सुलतानपुर पुलिस लाइन परिसर में एंटी करप्शन टीम का कार्यालय शुरू किया गया है। इसके साथ ही जिले के विभिन्न सरकारी कार्यालयों और सार्वजनिक स्थानों पर जागरूकता पोस्टर लगाए गए हैं।

पोस्टरों के माध्यम से आम नागरिकों से अपील की गई है कि यदि कोई सरकारी कर्मचारी या अधिकारी काम के बदले रिश्वत की मांग करता है तो इसकी शिकायत एंटी करप्शन टीम तक पहुंचाई जाए। इसके लिए 9454402484 हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है। पोस्टर पर ई-मेल के माध्यम से भी शिकायत करने की जानकारी दी गई है।

तहसील से थाने तक निगरानी का संदेश

एंटी करप्शन टीम के कार्यालय खुलने और जिलेभर में पोस्टर लगाए जाने के बाद सरकारी विभागों में निगरानी बढ़ने की उम्मीद है। तहसील, ब्लॉक, राजस्व, पुलिस समेत विभिन्न सरकारी कार्यालयों में अपने काम के लिए पहुंचने वाले लोगों को अब भ्रष्टाचार के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने का सीधा माध्यम उपलब्ध होगा। प्रशासन की इस पहल का उद्देश्य आम नागरिकों में यह भरोसा पैदा करना है कि सरकारी सेवा लेने के लिए रिश्वत देना मजबूरी नहीं है और रिश्वत मांगने वाले के खिलाफ शिकायत की जा सकती है।

कौन हैं आईआईटी कानपुर के पूर्व छात्र राकेश गंगवाल, जिन्होंने संस्थान को दिया 300 करोड़ रुपये का दान?

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। आईआईटी के पूर्व छात्र राकेश गंगवाल ने संस्थान को 300 करोड़ रुपये का दान देने की घोषणा की है। वह पहले भी 100 करोड़ रुपये दे चुके हैं। अब उनका कुल योगदान 400 करोड रुपये हो चुका है। इस धनराशि का प्रयोग गंगवाल स्कूल आप मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलाजी के विकास के लिए किया जाएगा। गंगवाल स्कूल ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर की एक अनूठी पहल है। जिसका उद्देश्य चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी को जोड़ना है, ताकि भारत में स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सुधार किया जा सके।

आईआईटीसे मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक की डिग्री लेने वाले राकेश गंगवाल भारतीय मूल के अमेरिकी कारोबारी और विमानन क्षेत्र के दिग्गज हैं।

विमानन कंपनी इंडिगो के सह-संस्थापक के रूप में उन्हें वैश्विक स्तर पर जाना जाता है। उन्होंने राहुल भाटिया के साथ वर्ष 2006 में इंडिगो की शुरुआत की थी। एक विमान से शुरू हुई एयरलाइन आगे चलकर भारत की सबसे बड़ी एयरलाइनों में शामिल हुई।

गंगवाल ने आईआईटीकानपुर से 1975 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक किया और इसके बाद अमेरिका के व्हार्टन स्कूल, यूनिवर्सिटी आफ पेंसिल्वेनिया से एमबीए किया।

उनका विमानन करियर यूनाइटेड एयरलाइंस से जुड़ा, जहां उन्होंने रणनीतिक योजना से लेकर वरिष्ठ प्रबंधन तक कई जिम्मेदारियां संभालीं। इसके बाद वह यूएस एयरवेज ग्रुप के अध्यक्ष एवं सीईओ रहे। 2003 से 2007 तक उन्होंने ट्रैवल टेक्नोलाजी कंपनी वर्ल्डस्पैन के चेयरमैन, प्रेसिडेंट और सीईओ के रूप में काम किया।

करीब 10 करोड़ की सड़क बनी दलदल, निर्माण एजेंसी की कार्यशैली पर सवाल

आर्यावर्त संवाददाता

बल्दीराय/सुलतानपुर। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत करीब 10 करोड़ रुपये की लागत से बन रही मायंग-नौगवांतीर सड़क बारिश में विकास की बजाय ग्रामीणों के लिए मुसीबत बन गई है। माधवपुर पुल से नौगवांतीर होते हुए मायंग तक करीब तीन किलोमीटर हिस्से में मिट्टी डालकर निर्माण अधूरा छोड़ दिए जाने से पूरा मार्ग दलदल में तब्दील हो गया है। कीचड़ और जलभराव के बीच राहगीरों, किसानों और स्कूली छात्र-छात्राओं का गुजरना दुर्घटना को खुला न्योता दे रहा है। बारिश ने सड़क निर्माण की गुणवत्ता और कार्यदायी संस्था की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि यदि निर्माण कार्य समयबद्ध और मानकों के अनुरूप कराया गया होता तो आज सड़क की यह दुर्दशा नहीं होती। सवाल यह भी है कि करोड़ों रुपये की परियोजना में निर्माण की निगरानी करने वाले जिम्मेदार अधिकारी आखिर मौके पर क्या देख रहे हैं ?

मिट्टी पड़ी, सड़क नहीं बनी, बारिश ने खोल दी पोल

माधवपुर पुल से मायंग तक लगभग तीन किलोमीटर हिस्से में सड़क पर मिट्टी डालकर काम छोड़ दिया गया। बारिश होते ही यही मिट्टी कीचड़ और दलदल में बदल गई। जगह-जगह पानी भरे गड्ढों के कारण पैदल चलना तक मुश्किल है। दोपहिया वाहन फिसल रहे हैं और चार पहिया वाहन कीचड़ में फंस रहे हैं। ऐसे हालात में स्कूली बच्चों की आवाजाही सबसे अधिक चिंताजनक बनी हुई है।

यह मार्ग धनपतगंज और कुड़वार ब्लॉक को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण संपर्क मार्ग है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में ग्रामीण, किसान, विद्यार्थी और अन्य राहगीर इसी रास्ते से आवागमन करते हैं। ग्रामसभा औधहा की करीब 500 आबादी के सामने तो स्थिति और गंभीर है, क्योंकि ग्रामीणों के आवागमन के लिए दूसरा व्यवहारिक रास्ता भी उपलब्ध नहीं है।

991.83 लाख की परियोजना, फिर भी जनता बेहाल

स्थल पर लगे शिलापट्ट के अनुसार 8.20 किलोमीटर लंबे इस मार्ग की स्वीकृत लागत 991.83 लाख रुपये यानी करीब 9.92 करोड़ रुपये है। निर्माण 6 फरवरी 2023 को शुरू हुआ था और इसे 5 फरवरी 2024 तक पूरा किया जाना था। इसके बाद पांच फरवरी 2029 तक अनुरक्षण की व्यवस्था भी निर्धारित है।

स्वीकार नहीं राष्ट्रगान का अपमान: कांग्रेस

जौनपुर। उन्नाव में एक कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रगान के बीच विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के मंच से नीचे उतरकर चले जाने के वायरल वीडियो को लेकर कांग्रेस ने मोर्चा खोल दिया है। सोमवार को कांग्रेस जिलाध्यक्ष डा. प्रमोद कुमार सिंह और शहर अध्यक्ष आरिफ खान के संयुक्त नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं ने कोतवाली पहुंचकर प्रभारी निरीक्षक अनीता सिंह को प्रार्थना पत्र सौंपा। कांग्रेसियों ने वायरल वीडियो के आधार पर विधानसभा अध्यक्ष के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग की। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा कि राष्ट्रगान देश की शान और सम्मान का प्रतीक है। इसका अपमान किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि वायरल वीडियो के आधार पर पूरे प्रकरण की जांच कर सतीश महाना के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जाना चाहिए।शहर अध्यक्ष आरिफ खान ने कहा कि राष्ट्रगान का अपमान देश के सम्मान से जुड़ा विषय है।

कोई माई का लाल रोक नहीं पाएगा... काशी-मथुरा में कार सेवा पर महंत राजू दास का बड़ा बयान

आर्यावर्त संवाददाता

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश में अयोध्या की हनुमानगढ़ी के महंत राजू दास ने गोरखपुर में एक कार्यक्रम के दौरान मथुरा और काशी में मंदिर निर्माण को लेकर एक अहम बयान दिया। उन्होंने कहा कि अयोध्या के मुद्दे के बाद काशी और मथुरा के लिए संघर्ष जारी रहेगा। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह आंदोलन कानूनी प्रक्रिया के साथ-साथ संवैधानिक तरीके से चलाया जाएगा और जरूरत पड़ने पर कार सेवा भी की जाएगी।

उन्होंने जोर देकर कहा कि अदालती मामला तो चलता रहेगा, लेकिन मंदिर निर्माण की मांग वाला संघर्ष भी जारी रहेगा। उन्होंने ऐलान किया कि विवादित ढांचे को गिरा दिया जाएगा और कोई माई का लाल रोक नहीं पाएगा। महंत राजू दास ने बताया कि मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि स्थल पर कार सेवा की तैयारी जल्द ही शुरू होगी। उन्होंने कहा कि इस संघर्ष में वे लाठियां खाएंगे, माखन-मिश्री का आनंद लेंगे और खुद भी लाठियां चलाएंगें।

यह कहते हुए कि भारत भगवान राम और श्री कृष्ण की भूमि है, उन्होंने कहा कि वे बाबर और औरंगजेब जैसे हमलावरों से जुड़े ढांचों को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने यह उम्मीद भी जताई कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में काशी और मथुरा में मंदिर बनेंगे। महंत राजू दास ने फिर दोहराया कि काशी और मथुरा की लड़ाई अयोध्या अभियान के बाद होगी। उन्होंने कहा कि आंदोलन संवैधानिक होगा और जरूरत पड़ने पर इसमें कार सेवा भी शामिल होगी।

अयोध्या की तरह काशी और मथुरा में भी मंदिर बनेंगे

उन्होंने कहा कि जिस तरह अयोध्या में राम मंदिर का रास्ता साफ हुआ, उसी तरह काशी और मथुरा में भी मंदिर बनेंगे। उन्होंने योगी आदित्यनाथ को प्रधानमंत्री बनाने की कोशिशों के बारे में भी बात की। महंत राजू दास के इस बयान से मथुरा और काशी के मुद्दों पर राजनीतिक और धार्मिक बहस फिर से शुरू होने की संभावना है।

मुरादाबाद को मिला नया कमिश्नर, आईएएस संगीता सिंह को मिली कमान... आंजनेय कुमार सिंह को नहीं मिला 8वां एक्सटेंशन

आर्यावर्त संवाददाता

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश शासन ने रविवार देर रात बड़ा प्रशासनिक फेरबदल करते हुए अलीगढ़ की मंडल आयुक्त संगीता सिंह को मुरादाबाद मंडल का नया कमिश्नर नियुक्त कर दिया है। इस नए आदेश के जारी होते ही पिछले कई दिनों से जारी उन तमाम अटकलों और कयासों पर विराम लग गया है, जिनमें निवर्तमान कमिश्नर आंजनेय कुमार सिंह को 8वीं बार सेवा विस्तार मिलने की चर्चाएं जोर पकड़ रही थीं। सिक्किम कैडर के 2005 बैच के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी आंजनेय कुमार सिंह का सातवां सेवा विस्तार 14 अगस्त को समाप्त हो गया था। इसके बाद से ही प्रशासनिक गलियारों में नए आदेश को लेकर उत्सुकता बनी हुई थी।

आंजनेय कुमार सिंह मार्च 2021 से मुरादाबाद के कमिश्नर पद पर तैनात थे और करीब साढ़े पांच वर्ष तक इसी पद पर रहने का रिकॉर्ड बनाया। इससे पहले रामपुर के लंबे समय तक जिलाधिकारी भी रह चुके हैं। प्रशासनिक सेवा के लिहाज से यह एक असामान्य रूप से लंबा कार्यकाल माना जाता है।

संगीता सिंह को कमान

शासन द्वारा जारी आदेश के बाद अब अलीगढ़ की मंडल आयुक्त संगीता सिंह मुरादाबाद की कमान संभालेंगी। संगीता सिंह के पास प्रशासनिक कार्यों का व्यापक अनुभव है और उनके मुरादाबाद आने से मंडल के विकास कार्यों व कानून-व्यवस्था को नई दिशा मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। रविवार देर रात आदेश जारी होते ही नए कमिश्नर के स्वागत और पदभार ग्रहण करने की प्रशासनिक तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

मुरादाबाद में काफी चर्चित रहे आंजनेय सिंह

वहीं दूसरी ओर, 2005 बैच के आईएएस आंजनेय कुमार सिंह का कार्यकाल मुरादाबाद में काफी चर्चित रहा है। वर्ष 2015 में अंतर-कैडर प्रतिनियुक्ति पर यूपी आए आंजनेय सिंह रामपुर के जिलाधिकारी रहते हुए सपा नेता आजम खान और जौहर विश्वविद्यालय से जुड़े मामलों पर की गई सख्त प्रशासनिक कार्रवाई के कारण सबसे ज्यादा सुर्खियों में आए थे। इसके बाद मार्च 2021 से वे लगातार मुरादाबाद मंडल आयुक्त पद पर बने रहे।

सेवा पूरी होने के बाद अवकाश पर थे आंजनेय

14 अगस्त को सातवां सेवा विस्तार पूरा होने के बाद वे पूर्व निर्धारित अवकाश पर चले गए थे। पिछले वर्षों में भी कार्यकाल समाप्त होने के बाद अवकाश के दौरान ही उनके एक्सटेंशन के आदेश जारी होते रहे थे। हालांकि, इस बार सरकार ने उन्हें 8वीं बार सेवा विस्तार न देते हुए अलीगढ़ की कमिश्नर संगीता सिंह को मुरादाबाद की नई जिम्मेदारी सौंपकर इस चर्चा को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया है।

जौहर यूनिवर्सिटी मामले पर भी रहेगी नजर

मुरादाबाद मंडल की नई मंडलायुक्त के सामने सबसे चर्चित मामलों में से एक आजम खान की मोहम्मद अली जौहर यूनिवर्सिटी के 38 भवनों के ध्वस्तीकरण से जुड़ा मामला भी रहेगा।

मामले में रामपुर विकास प्राधिकरण ने 15 जुलाई 2026 को 40 में से 38 भवनों को अवैध निर्माण मानते हुए ध्वस्तीकरण का आदेश जारी किया था। इसके खिलाफ यूनिवर्सिटी प्रबंधन और जौहर ट्रस्ट ने मंडलायुक्त न्यायालय में चुनौती दी थी।

27 जुलाई को तत्कालीन मंडलायुक्त आंजनेय कुमार सिंह की अदालत ने ध्वस्तीकरण की कार्रवाई पर अंतरिम रोक लगा दी थी। इसके बाद 13 अगस्त को हुई सुनवाई में अगली तारीख 25 अगस्त तय की गई थी।

हक पर रहने के बावजूद माफी मांगने वाला जन्नती

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। मौलाना वसीम अहमद शेरवानी ने रविवार की रात नगर के मोहल्ला तारापुर में कहा कि जो हक पर हो, उसके बावजूद झुक कर सुलह कर ले वो जन्नती होता है। दूसरों से सुलह कर लेना बड़प्पन होता है। आप सही हों, उसके बाद भी लोगों से नरमी से पेश आएं, ये बड़ी बात होती है। मौलाना वसीम 9 रबीउल अव्वल के मौके पर अंजुमन बागे रसूल की तरफ से आयोजित जलसा सीरतुन्नबी मदहे सहाबा को खेताब कर रहे थे।उन्होंने कहा कि किसी के अमानत की हिफाजत करना अमानतदार की निशानी है। जिसकी अमानत हो उसे पूरी-पूरी अदा की जाय। बच्चों का पेट पाला जाय तो हलाल दौलत से। उनके जिस्म पर कपड़े हलाल दौलत से पहनाए जाएं। उनके सिर पर छत हलाल दौलत से बनाई जाए। बच्चों को नमाजी बनाएं, यही अमानत की अदायगी है। हमें अच्छे डॉक्टर चाहिए, अच्छा वकील चाहिए, हमारा बच्चा इसके लिए काबिल बने, इसके लिए भी कोशिश की जानी चाहिए। लेकिन, आखिरत पहले मजबूत होनी चाहिए। अल्लाह को हर हाल में राजी किया जाना चाहिए। इसके बिना दुनिया में कामयाबी हासिल नहीं होगी। जो भी इंसान अपने पड़ोसी का ख्याल नहीं रखता वो गुनाहगार होता है। मौलाना आफाक अहमद ने खेताब करते हुए सूरह फातिहा के मायने बताए। कहा कि इंसान अगर अल्लाह के बताए रास्ते पर चले तो जरूर कामयाब होगा। आज इंसान घाटे में है लेकिन, जो लोग ईमान लाये वो कामयाब हैं। हाफिज जफर, मौलाना आरिफ ने भी जलसे को खेताब किया। जलसा सीरतुन्नबी मदहे सहाबा में जनपद के कई मशहूर नतख्वां ने भी शिरकत की। नेजामत करते हुए नतख्वां यामीन जौनपुरी ने अपनी नात हम गुलामे मुस्तफा हैं।

क्या होती है डांस थेरेपी? कैसे से फिजिकल के साथ मेंटल हेल्थ के लिए भी फायदेमंद

डांस करना महज कला नहीं है बल्कि ये फिजिकल और मेंटल हेल्थ से भी जुड़ा होता है। अब इसे थेरेपी के रूप में भी किया जाने लगा है। चलिए जान लेते हैं कि डांस थेरेपी क्या होती है और इससे फायदा कैसे मिलता है।

डांस/मूवमेंट थेरेपी (DMT) एक ऐसा प्रोसेस है जिसे सोशल मेलजोल को बढ़ाने से लेकर सोचने-समझने की क्षमता और शारीरिक तालमेल को इंप्रूव करने के लिए किया जाता है। ये एक तरह की क्रिएटिव साइकोथेरेपी होती है जो मेंटली दुरुस्त रखने के साथ ही शरीर की मजबूती और लचीलापन भी बढ़ाती है। तो चलिए जान लेते हैं कि आखिर ये थेरेपी कैसे काम करती है और क्या वजहें हैं कि ये फिजिकल के साथ मेंटल हेल्थ के लिए भी फायदेमंद है।

डांस थेरेपी में बातचीत के अलावा शरीर की हलचल और बिना बोले जाने वाले कम्यूनिकेशन का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे साइकोलॉजिकल और बिहेवियरल समस्याओं को संभालने में मदद मिलती है। ये थेरेपी अपने शरीर में छिपी उन चीजों को खोजने की एक प्रक्रिया है, जिसे कभी-कभी इंसान अनदेखा कर देता है या फिर अपनी उन भावनाओं के जाहिर करने में सक्षम नहीं होता है।

क्या होती है टेक्नीक?

डांस थेरेपी की टेक्निक हर इंसान के लिए अलग होती है, क्योंकि ये इस बात पर निर्भर करता है कि वो खुद को कितना सेफ महसूस कर रहे हैं और अपनी बॉडी के साथ कितने सहज हैं। इसी के साथ वो मूवमेंट के जरिए खुद को असल तरीके से जाहिर करने में कितने सक्षम हैं। हालांकि इस पूरे प्रोसेस में ज्यादातर बिना बातचीत के ही मूवमेंट किए जाते हैं।

डांस थेरेपी में आपके थेरेपिस्ट मूवमेंट और आपकी भावनाओं के बीच के संबंधों को समझने और जानने में मदद करते हैं। इसके अलावा शरीर के इमोशन और सांस लेने की प्रक्रिया के बीच जागरूकता बढ़ाते हैं। ठीक होने के प्रोसेस को बढ़ावा देने के लिए खास तरह के मूवमेंट करवाए जाते हैं और ये बातचीत पर आधारित थेरेपी के तरीके भी अपना सकते हैं। डांस थेरेपिस्ट मिरर तकनीक को अपना सकते हैं, जिसमें किसी दूसरे के डांस के स्टेप्स को कॉपी करके भावनाओं को व्यक्त करना है शामिल हो सकता है।

फिजिकल हेल्थ पर डांस थेरेपी का असर

जब आप डांस थेरेपी लेते हैं तो बॉडी के अलग-अलग पार्ट्स से लगातार मूवमेंट करते हैं। इससे मांसपेशियों की एक्टिविटी बढ़ती है और बॉडी बैलेंस के साथ ही कोऑर्डिशन यानी शरीर के अंगों का तालमेल बेहतर होता है। ये बॉडी पोस्चर सुधारने से लेकर शरीर के प्रति जागरूकता लाने में भी हेल्पफुल है और फ्लेक्सिबिलिटी बढ़ाने में मददगार साबित हो सकती है। इसी के साथ ये थेरेपी आपको फिट रखने में मदद करती है और एनर्जेटिक महसूस कराती है।

मेंटली क्या होता है इसका फायदा?

मूवमेंट और संगीत आपके स्ट्रेस को कम करते हैं, जिससे मानसिक थकान भी कम होती है और मूड बेहतर बनता है। ये भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम होता है, जिससे अकेलापन महसूस होने जैसी दिक्कतों में कमी आ सकती है और इसी के साथ आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इससे सोशल बिहेवियर भी अच्छा हो सकता है, क्योंकि लोग ग्रुप्स में होते हैं जिससे एक दूसरे से जुड़ने का मौका मिलता है। डांस थेरेपी से शरीर और दिमाग के बीच भी तालमेल बैठाने में मदद मिलती है।

चने और पनीर से बनाएं हाई प्रोटीन रेसिपीज़, नाश्ते के लिए हैं बेस्ट

चना और पनीर दोनों ही प्रोटीन के अच्छे सोर्स हैं। प्रोटीन शरीर के लिए जरूरी पोषक तत्व है, जो मांसपेशियों की मरम्मत और उन्हें मजबूत रखने में मदद करता है। खासकर जो लोग वर्कआउट या एक्सरसाइज करते हैं, उनके लिए डाइट में पर्याप्त प्रोटीन लेना जरूरी होता है। सुबह का नाश्ता भी ऐसा होना चाहिए, जो शरीर को एनर्जी दे और पेट को लंबे समय तक भरा रखने में मदद करे।

चना खाने से प्रोटीन के साथ फाइबर, आयरन और फोलेट जैसे पोषक तत्व मिलते हैं। वहीं, पनीर में प्रोटीन और कैल्शियम पाया जाता है, जो मांसपेशियों और हड्डियों के लिए जरूरी हैं। वर्कआउट करने वाले लोग अपनी डाइट में चने और पनीर को शामिल करके प्रोटीन की जरूरत पूरी करने में मदद ले सकते हैं। अगर आप भी सुबह के नाश्ते में प्रोटीन बढ़ाना चाहते हैं, तो चने और पनीर से बनी अलग-अलग रेसिपीज़ ट्राई कर सकते हैं। आइए जानते हैं कौन सी रेसिपीज़ बनाएं और इन्हें बनाने का आसान तरीका क्या है।

चना-पनीर चीला

भिगोए हुए चनों को पीसकर पनीर, प्याज, टमाटर और हल्के मसाले मिलाएं। मिश्रण को तवे पर फैलाकर थोड़ा तेल लगाएं और दोनों तरफ से सुनहरा होने तक सेंकें। चने और पनीर से प्रोटीन मिलता है, जबकि चने का फाइबर पेट को लंबे समय तक भरा रखने में मदद कर सकता है।

चना-पनीर सैंडविच

उबले चनों को हल्का मैश करके उसमें पनीर, प्याज, टमाटर और हरा धनिया मिलाएं। इस मिश्रण को होल व्हीट ब्रेड के बीच रखें और तवे पर दोनों तरफ से क्रिस्पी होने तक सेंकें। चने और पनीर से प्रोटीन, जबकि ब्रेड से फाइबर मिल सकता है, जो नाश्ते को ज्यादा पौष्टिक बनाता है।

चना-पनीर सलाद

उबले चने और छोटे टुकड़ों में कटा पनीर एक बाउल में डालें। इसमें खीरा, टमाटर, प्याज, नींबू का रस और थोड़ा काला नमक मिलाएं। बिना पकाए तैयार होने वाला यह सलाद प्रोटीन और फाइबर देता है। सब्जियों से विटामिन और मिनरल्स भी मिल सकते हैं, जो शरीर की सेहत के लिए जरूरी हैं।

चना-पनीर टिक्की

उबले चनों को मैश करके उसमें कद्दूकस किया पनीर, प्याज, धनिया और मसाले मिलाएं। छोटी टिक्की बनाकर तवे पर थोड़ा तेल लगाकर दोनों तरफ से कुरकुरा होने तक सेंकें। चना और पनीर प्रोटीन देते हैं, जो मांसपेशियों के लिए जरूरी है।

रेसिपीज़ बनाते समय किन बातों का रखें ध्यान?

चना इस्तेमाल करने से पहले उसे अच्छी तरह धोकर और पूरी तरह पकाकर लें। पनीर ताजा होना चाहिए और उसे लंबे समय तक कमरे के तापमान पर न रखें। रेसिपीज़ बनाते समय बहुत ज्यादा तेल, नमक या मक्खन डालने से बचें। अगर आप वजन कम करने या फिटनेस पर ध्यान दे रहे हैं, तो कम तेल में इन्हें पकाएं। सैंडविच के लिए होल व्हीट ब्रेड लेना बेहतर है। चने को बहुत ज्यादा न पकाएं, वरना उसका स्वाद और बनावट बदल सकती है। वर्कआउट करने वाले लोग अपनी प्रोटीन जरूरत के अनुसार मात्रा तय कर सकते हैं।

लंच बॉक्स में यूज हुआ फॉयल पेपर बना देगा कई काम, जान लें इसे किस तरह करें यूज

लंच बॉक्स में आप भी अगर एल्युमिनियम फॉयल पेपर का यूज करते हैं और इसके बाद इसे फेंक देते हैं तो ये गलती न करें। इसे आप घर के कई कामों में ले सकते हैं। जान लेते हैं कि इसका इस्तेमाल किन तरीकों से करें।

फॉयल पेपर का यूज के बाद डस्टबिन में डाल देते हैं तो आज से ही ऐसा करना बंद कर दें। इसका रीयूज करके आप अपने घर में कई काम आसानी से निपटा सकते हैं। इस फॉयल का यूज आप अपने किचन के साथ ही गार्डन में भी कर सकते हैं। यहां तक कि दाग-धब्बे साफ करना, बर्तनों में जमा गंदगी हटाना जैसे कामों में भी फॉयल पेपर का यूज किया जा सकता है।

फॉयल पेपर एल्युमिनियम की बहुत ही पतली शीट होती है जो आसानी से किसी भी आकार में मोड़ ली जाती है। यही वजह है कि ये हवा, नमी को रोकने में असरदार होने के साथ ही कई तरह से आपके काम आ सकती है। चलिए जान लेते हैं डिटेल के साथ।

चांदी के गहने चमकाएं

फॉयल पेपर का यूज आप चांदी के बर्तन और गहने को साफ करने के लिए कर सकते हैं। बस यूज किए गए फॉयल पेपर को अच्छी तरह से धो लें। इसके बाद इसे बाउल में बिछा दें और उसमें गरम पानी भर दें। इसके बाद इसमें एक चम्मच बेकिंग सोडा, नमक डालें। इस लिक्विड में चांदी की चीजें डुबोकर कम से कम 20 मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद मुलायम स्पंज से साफ कर लें।

कैंची की धार तेज करें

टिफिन के बचे फॉयल पेपर का यूज आप कैंची की धार तेज करने के लिए कर सकते हैं। इसके लिए कैंची से फॉयल पेपर को कई बार काटें। इस ट्रिक से भले ही कैंची बहुत शार्प न हो, लेकिन काफी हद तक आपकी कैंची की धार बढ़ जाएगी, जिससे आप आसानी से उसको काम में ले सकते हैं।

बर्तनों पर जमा चिकनाई

अगर खाना पकाने के बर्तनों और गैस के बर्नर पर जिद्दी चिकनाई, दाग हो गए हैं तो आप फॉयल पेपर से इसे क्लीन कर सकते हैं। इसको मोड़कर एक स्क्रबर पैड या फिर बॉल जैसा बना लें। इसके बाद इससे रगड़कर कालिख या जमी हुई गंदगी को साफ कर दें। बस ध्यान रखें कि आपको नॉन-स्टिक बर्तन पर इसे यूज नहीं करना है, नहीं तो इससे बर्तनों पर रगड़ बन जाती है।

पौधों से कीट रहेंगे दूर

फॉयल पेपर को आप अपने गार्डन में जगह-जगह लटका सकते हैं। जब इनपर धूप पड़ती है तो तेज चमक पैदा होती है, जिससे कीट-पतंगे, पक्षी परेशान हो जाते हैं और पौधों से दूर रहते हैं। इसके अलावा आप गमलों के चारों तरफ फॉयल पेपर लपेट सकते हैं, इससे तेज गर्मी में गमले गर्म नहीं होते हैं और मिट्टी में नमी बनी रहती है।

मुंह का स्वाद कड़वा क्यों हो जाता है? जानिए 5 कारण

मुंह का कड़वा स्वाद एक आम समस्या है, जिसे कई लोग अनुभव करते हैं। यह समस्या न केवल आपके स्वास्थ्य के लिए चिंता का विषय हो सकती है, बल्कि आपके दिन की शुरुआत और खत्म होने का मजा भी बिगाड़ सकती है। इस लेख में हम कुछ प्रमुख कारणों पर चर्चा करेंगे, जिनके कारण मुंह का स्वाद कड़वा हो सकता है, ताकि आप सही समय पर उपाय कर सकें और इस समस्या से राहत पा सकें।

कुछ दवाओं का सेवन

कुछ दवाओं का सेवन भी मुंह के कड़वे स्वाद का कारण बन सकता है, जैसे कि कुछ एंटी-एलर्जी की दवाएं या मन के तनाव को कम करने वाली दवाएं।

इन दवाओं के कारण मुंह सूख सकता है या पेट में एसिड बढ़ सकता है, जिससे कड़वाहट होती है। अगर आप नियमित रूप से कोई दवा ले रहे हों तो अपने डॉक्टर से सलाह लें और उनकी सलाह अनुसार दवा बदलवाएं या उसकी मात्रा कम करवाएं।

जीभ की सफाई का ध्यान न रखना

जीभ की सफाई का ध्यान न रखना मुंह के कड़वे स्वाद का एक बड़ा कारण हो सकता है। अक्सर लोग ब्रश करते समय जीभ को नजरअंदाज कर देते हैं, जिससे बैक्टीरिया और गंदगी जमा हो जाती है।

इससे मुंह में कड़वाहट महसूस हो सकती है। इसलिए रोजाना ब्रश करते समय जीभ को भी साफ करें। इसके लिए आप नरम ब्रश का उपयोग कर सकते हैं और हल्के हाथों से जीभ को साफ करें।

दांतों की समस्याएं

दांतों की समस्याएं जैसे कि दांतों में कीड़े लगना, मसूड़ों की सूजन या दांतों में दर्द भी मुंह के कड़वे स्वाद का कारण बन सकती हैं।

इन समस्याओं के कारण बैक्टीरिया पनपते हैं, जो कड़वाहट पैदा करते हैं। इसलिए नियमित रूप से दंत चिकित्सक से जांच करवाना जरूरी है ताकि इन समस्याओं का समय रहते पता चल सके और उनका इलाज हो सके।

इसके अलावा दांतों की सफाई पर भी विशेष ध्यान दें।

पाचन तंत्र की खराब स्थिति

पाचन तंत्र की खराब स्थिति भी मुंह के कड़वे स्वाद का एक अहम कारण हो सकती है। जब पाचन तंत्र सही तरीके से काम नहीं करता तो पेट में एसिड बढ़ने लगता, जो कड़वाहट पैदा करता है।

इसके अलावा खट्टी-मीठी चीजों का सेवन भी इस समस्या को बढ़ा सकता है। इसलिए पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार लें और नियमित रूप से पानी पिएं। साथ ही ताजे फलों और सब्जियों का सेवन करें।

धूम्रपान और शराब का सेवन

धूम्रपान और शराब का सेवन न केवल आपकी सेहत के लिए हानिकारक होता है बल्कि ये मुंह में भी कड़वाहट पैदा कर सकता है।

तंबाकू और शराब के कारण मुंह में सूखापन आता है, जिससे बैक्टीरिया पनपते हैं और कड़वाहट महसूस होती है। इसलिए इन आदतों को छोड़ना जरूरी है ताकि आपके मुंह की स्थिति बेहतर हो सके और आप स्वस्थ रह सकें।

इसके अलावा धूम्रपान और शराब का सेवन कम करने के लिए चिकित्सा सहायता लें।

बेच रहे हैं पुराना फोन, फर्नीचर या गहने, जानिए कब लगेगा टैक्स और कब मिलेगी छूट?

हर निजी सामान बेचने पर इनकम टैक्स नहीं लगता। मोबाइल, लैपटॉप, कपड़े, फर्नीचर और बर्तन जैसी रोजमर्रा की इस्तेमाल वाली चीजें आमतौर पर 'पर्सनल इफेक्ट्स' में आती हैं।

अगर आप अपना पुराना मोबाइल, लैपटॉप, फर्नीचर, कपड़े, कार, स्कूटर या गहने बेचने की सोच रहे हैं, तो यह जानना जरूरी है कि हर सामान बेचने पर इनकम टैक्स नहीं लगता। टैक्स इस बात पर निर्भर करता है कि आपने कौन-सी चीज बेची है और उसे बेचने पर आपको कितना फायदा हुआ है।

आमतौर पर किसी संपत्ति को खरीदने के बाद ज्यादा कीमत पर बेचने से जो मुनाफा होता है, उसे कैपिटल गेन कहा जाता है। इस मुनाफे पर टैक्स देना पड़ सकता है। लेकिन इनकम टैक्स कानून में कुछ ऐसी निजी इस्तेमाल की चीजों को छूट दी गई है, जिन्हें 'पर्सनल इफेक्ट्स' कहा जाता है।

किन चीजों को बेचने पर टैक्स नहीं लगता?

पर्सनल इफेक्ट्स का मतलब ऐसी चल संपत्ति से है, जिसका इस्तेमाल व्यक्ति या उसके परिवार का कोई सदस्य निजी या रोजमर्रा की जरूरतों के लिए करता है। इसमें आमतौर पर कपड़े, फर्नीचर, बर्तन, मोबाइल फोन, लैपटॉप और रोजाना इस्तेमाल होने वाले दूसरे इलेक्ट्रॉनिक सामान शामिल हैं। इन चीजों को बेचने पर होने वाला मुनाफा सामान्य तौर पर टैक्स के दायरे में नहीं आता। उदाहरण के लिए, अगर आपने कुछ साल पहले ₹50,000 में मोबाइल खरीदा था और बाद में उसे ₹15,000 में बेच दिया, तो इस बिक्री पर आम तौर पर इनकम टैक्स नहीं लगेगा। कार, स्कूटर और दूसरे निजी इस्तेमाल के सामान भी इस छूट के दायरे में आ सकते हैं।

गहने बेचने पर देना पड़ सकता है टैक्स

यहां सबसे जरूरी बात यह है कि ज्वेलरी को पर्सनल इफेक्ट्स में शामिल नहीं किया गया है। इसलिए सोना, चांदी, प्लेटिनम या कीमती धातुओं से बने गहने बेचने पर हुए मुनाफे पर टैक्स लग सकता है। कीमती पत्थरों को भी टैक्स नियमों के तहत ज्वेलरी का हिस्सा माना जाता है। इसी तरह पेंटिंग, मूर्तियां, कलाकृतियां और पुरातात्विक संग्रह जैसी चीजों की बिक्री से होने वाला मुनाफा भी टैक्स के दायरे में आ सकता है।

कपड़े या फर्नीचर में कीमती पत्थर हों तो?

अगर किसी फर्नीचर, बर्तन या दूसरी निजी वस्तु पर कीमती धातु या कीमती पत्थर लगे हुए हैं, तो उसकी बिक्री पर टैक्स लग सकता है। इसी तरह अगर किसी कपड़े में कीमती धातु या पत्थर लगाए या सिले गए हैं, तो टैक्स नियमों के अनुसार उसे ज्वेलरी माना जा सकता है।

गहने बेचने पर पूरे पैसे पर टैक्स नहीं

गहने बेचने पर मिलने वाली पूरी रकम पर टैक्स नहीं लगता। टैक्स की गणना आमतौर पर मुनाफे पर होती है। मान लीजिए आपने ₹2 लाख में सोने का गहना खरीदा और बाद में उसे ₹4 लाख की कीमत पर बेच या एक्सचेंज किया। ऐसे मामले में ₹2 लाख का अंतर कैपिटल गेन हो सकता है और उस पर लागू नियमों के अनुसार टैक्स देना पड़ सकता है। अगर गहना आपको विरासत में मिला है या गिफ्ट में मिला है, तो टैक्स की गणना करते समय पिछले मालिक की खरीद लागत और होल्डिंग पीरियड को भी ध्यान में रखा जा सकता है।

दस्तावेज संभालकर रखें

पुरानी चीज बेचते समय पहले यह जांच लें कि वह पर्सनल इफेक्ट्स की कैटेगरी में आती है या नहीं। खासकर सोना और दूसरी महंगी वस्तुओं के मामले में खरीद और बिक्री से जुड़े दस्तावेज संभालकर रखना जरूरी है। बड़े लेनदेन में बिल, खरीद की रसीद और बैंक स्टेटमेंट जैसे रिकॉर्ड सुरक्षित रखें। इससे भविष्य में टैक्स की गणना या आयकर विभाग से जुड़े सवालों का जवाब देने में आसानी होगी।

बिना टॉवर और केबल के दौड़ेगा सुपरफास्ट इंटरनेट, भारत में 'स्टारलिंक लॉन्च करने की तैयारी में एलन मस्क

दुनिया के सबसे अमीर उद्योगपति एलन मस्क भारत के टेलीकॉम और इंटरनेट सेक्टर में बड़ा धमाका करने की पूरी तैयारी में हैं। मस्क अपनी बहुचर्चित सैटेलाइट इंटरनेट सर्विस 'स्टारलिंक को भारत में उतारने के लिए लगातार जमीन तैयार कर रहे हैं। इसी बीच उनका एक सोशल मीडिया पोस्ट तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें उन्होंने भारत के उन सुदूर और ग्रामीण इलाकों में हाई-स्पीड इंटरनेट पहुंचाने का बड़ा विजन साझा किया है, जहां आज भी पारंपरिक मोबाइल नेटवर्क या 4त्र कनेक्टिविटी दम तोड़ देती है।

ग्रामीण भारत में कनेक्टिविटी की खाई पाटने पर नजर

एलन मस्क ने हाल ही में एक पोस्ट को री-पोस्ट करते हुए साफ किया कि स्टारलिंक का मुख्य फोकस भारत के उन इलाकों तक पहुंचना है, जहां इंटरनेट की पहुंच बेहद सीमित है। उन्होंने जिस रिपोर्ट का हवाला दिया, उसमें बताया गया है कि देश के तमाम गांवों में अब भी स्थिर 4त्र नेटवर्क का अभाव है और शहरों के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट डेंसिटी काफी कम है। मस्क का मानना है कि स्टारलिंक सीधे अंतरिक्ष से सिग्नल भेजकर इन दुर्गम इलाकों के डिजिटल अंधेरे को हमेशा के लिए दूर कर सकती है।

बिना मोबाइल टॉवर के कैसे काम करती है यह जादुई तकनीक?

स्टारलिंक की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसे काम करने के लिए जमीन पर किसी भी तरह के भारी-भरकम मोबाइल टॉवर या ऑप्टिकल फाइबर केबल के जाल की जरूरत नहीं होती। यह पूरी तरह से लो अर्थ ऑर्बिट (रुश्वह्र) सैटेलाइट्स पर आधारित इंटरनेट प्रणाली है। इस सर्विस का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ता को केवल अपने घर या इमारत की छत पर एक छोटा सा डिश एंटीना (रिसीवर) लगाना होता है, जो सीधे अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स से सिग्नल पकड़कर यूजर को बिजली जैसी तेज इंटरनेट स्पीड मुहैया कराता है।

मंजूरियों का पेंच, त्रद्गठ्ठ-2 सैटेलाइट्स के लिए फिर ठोका दावा

हालांकि, भारत में स्टारलिंक की एंट्री का रास्ता अभी पूरी तरह साफ नहीं हुआ है और कंपनी को कई जरूरी सरकारी मंजूरियों का इंतजार है। इससे पहले गृह मंत्रालय ने सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं के चलते स्टारलिंक को हरी झंडी देने की प्रक्रिया पर रोक लगा दी थी। लेकिन मस्क हार मानने के मूड में नहीं हैं। ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक, कंपनी ने अपने अत्याधुनिक 'त्रद्गठ्ठ 2 सैटेलाइट कॉन्स्टेलेशन की मंजूरी के लिए भारतीय अंतरिक्ष नियामक 'ढ्ढह्र-स्क्क्रष्टद्ग में दोबारा आवेदन किया है। इन नई पीढ़ी के सैटेलाइट्स की खासियत यह है कि ये सीधे मोबाइल डिवाइस से कनेक्ट होने (डायरेक्ट-टू-डिवाइस) की क्षमता भी रखते हैं।

अमेरिकी जेन-जी ज्यादा आक्रामक : भाषण पसंद न आने पर वक्ता को जबरन रोकने के समर्थक, हिंसा से भी परहेज नहीं

वॉशिंगटन, एजेंसी। लोकतंत्र का बुनियादी नियम यही माना जाता है कि असहमति का जवाब बहस से दिया जाए, न कि जबर्दस्ती या हिंसा से। लेकिन अमेरिका में यह सोच अब धूमिल पड़ती नजर आ रही है। एक नए शोध में सामने आया है कि पुरानी पीढ़ी की तुलना में जेन-जी में राजनीतिक सहनशीलता घट रही है।

नई पीढ़ी सार्वजनिक मंच पर किसी वक्ता का भाषण पसंद न आने पर उसे रोकने के लिए चीखने-चिल्लाने, नारेबाजी करने और यहां तक कि हिंसा का सहारा लेने को भी गलत नहीं मानती। पॉलिटिकल साइंस एंड पॉलिटिक्स प्रकाशित केविन जे वॉलस्टेन का यह अध्ययन बताता है कि अभिव्यक्ति की आजादी पर अमेरिकी युवाओं का नजरिया तेजी से बदल रहा है। नतीजे बताते हैं कि युवा पीढ़ी अभिव्यक्ति की आजादी का समर्थन तो करती है, लेकिन जब बात उनके विचारों के विपरीत या आपत्तिजनक मुद्दों की आती है तो सहनशीलता दिखाने के बजाय सामने वाले को चुप कराने में विश्वास रखते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सामान्य मुद्दों पर उदारवादी और रुढ़िवादी दोनों के विचारों में थोड़ा-बहुत अंतर पाया गया। लेकिन नस्ली भेदभाव या आपत्तिजनक बयान देने वालों को जबरन रोकने पर दोनों समान रूप से सहमत दिखे। अध्ययन के दौरान यूनिवर्सिटी जाने वाले और कम पढ़े-लिखे युवाओं की राय भी समान रही। ऐसे में इस अध्ययन को नजरिये में पीढ़ीगत बदलाव का संकेत माना जा रहा है।

युवा उदारवादियों ने उग्र तरीकों का सबसे अधिक साथ दिया

शोध के दौरान जब बिना कोई खास मुद्दा बताए सामान्य सवाल पूछा गया तो जेन-जी पुरानी पीढ़ियों की तुलना में नारेबाजी करने, रास्ता रोकने और हिंसा का उपयोग करने के प्रति अधिक सहज और सहमत दिखे।

दो अलग स्थितियों के आधार पर जानी गई राय

राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि सर्वेक्षण में सटीक नतीजे पाने के लिए प्रतिभागियों के समूह के सामने दो अलग-अलग स्थितियों को रखकर उनकी राय जानने की कोशिश की गई। पहले समूह से सामान्य तौर पर पूछा गया कि क्या वक्ताओं को रोकना या हिंसा सही है? वहीं, दूसरे समूह से पहले उनका सबसे नापसंद विचार चुनने को कहा गया और फिर उस विचार का प्रचार करने वाले वक्ता को रोकने के तरीकों पर राय मांगी गई। इसमें विरोध के तीन मुख्य तरीकों-हंगामा करके आवाज दबाने, रास्ता रोकने और हिंसा का सहारा लेने पर लोगों की स्वीकृति का स्तर मापा गया।

ईरान ने 40 साल पहले ही शुरू कर दी थी अमेरिका से युद्ध की तैयारी, बनाई थी रणनीति

वॉशिंगटन, एजेंसी। भारत के सेवानिवृत्तलेफ्टिनेंट जनरल केजेएस ढिल्लों ने कहा कि ईरान पिछले चार दशक से अमेरिका के साथ संभावित युद्ध की तैयारी कर रहा था। उसने शीर्ष नेतृत्व के खत्म होने जैसी स्थिति से निपटने की योजना भी बनाई थी। इससे विरोधियों के लिए पूरे ईरान की सैन्य क्षमता को खत्म करना मुश्किल रहा।

ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन अमेरिका के कार्यक्रम में पूर्व सैन्य खुफिया प्रमुख ढिल्लों ने कहा, ईरान ने अपनी सेना को 31 स्वतंत्र मुख्यालयों में बांटने वाली रणनीति अपनाई। इसके तहत केंद्रीय नेतृत्व खत्म होने पर भी अलग-अलग सैन्य इकाइयां काम करती रह सकती हैं। ढिल्लों के मुताबिक, ईरान का पहाड़ी भूगोल भी उसके लिए बड़ा सुरक्षा कवच है। ऐसे इलाके में जमीनी हमला करना बेहद मुश्किल है। गर्मियों में ईरान के अंदर तापमान 55 से 60 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है।

होर्मुज की सुरक्षा पर विशेष ध्यान

ढिल्लों ने कहा, ईरान के पास अमेरिका को समुद्र में सीधे चुनौती देने के लिए विमानवाहक पोत या मजबूत वायुसेना नहीं है। इसलिए उसने होर्मुज की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया है। इसके लिए स्पीड बोट, समुद्री बारूदी सुरंगें, टॉरपीडो नौकाएं, तटीय तोपें, मिसाइल और ड्रोन जैसी क्षमताएं विकसित की गई हैं।

ट्रंप ने होर्मुज को बताया अमेरिका का नया इलाका

अमेरिका और ईरान के बीच तनाव रविवार को और बढ़ गया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर साझा करते हुए रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण होर्मुज को नया अमेरिकी क्षेत्र बताया। इस पर ईरान की ओर से कड़ी प्रतिक्रिया सामने आई है। ईरान की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव मोहसिन रजाई ने कहा अमेरिका जब तक अपना रुख नहीं बदलता, तब तक यह समुद्री रास्ता बंद रहेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने 18 अगस्त को भी ऐसी ही तस्वीर साझा की थी। इससे पहले 14 अगस्त को लॉन्ग आइलैंड में पुलिस अकादमी के कार्यक्रम में उन्होंने कहा था कि वह जल्द होर्मुज को अमेरिका का क्षेत्र घोषित कर सकते हैं।

मेलिंडा का नया जीवन मंत्र : अपने लिए समय निकालना स्वार्थ नहीं, सबसे अमीर शख्स की पत्नी शादी टूटने से कैसे उबरीं

सिएटल, एजेंसी। कभी माइक्रोसॉफ्ट कॉरपोरेशन के संस्थापक और लंबे समय तक दुनिया के सबसे अमीर शख्स रहे बिल गेट्स की पत्नी मेलिंडा एन फ्रेंच गेट्स (60) ने शादी के 27 साल बाद हुए तलाक को जीवन का सबसे मुश्किल दौर बताया है। तलाक के बाद उनके जीवन में बड़ा शून्य और तनाव आ गया था। हालांकि अब वह इससे उबर चुकी हैं और अपनी नई पुस्तक द नेक्स्ट डेः ट्रांजिशंस, चेंज, एंड मूविंग फॉरवर्ड में उन्होंने इस दौर से बाहर निकलने का अपना निजी अनुभव और तरीका साझा किया।

उन्होंने लोगों को नया जीवन मंत्र दिया है, तनाव से राहत पाने के लिए अपने स्मार्टफोन को दूर रखें और रोज कम से कम 10 मिनट पूरी तरह शांत वातावरण में केवल खुद के साथ बिताएं। इस दौरान चाहे ध्यान लगाएं, हल्की जॉगिंग करें या फिर आंखें बंद करके सिर्फ गहरी सांसें लें, इनसे आपके शरीर और मन में नई ऊर्जा भर सकती है। यह 10 मिनट आपके लिए संजीवनी का काम कर सकता है।

अपने लिए समय निकालना स्वार्थ नहीं

मेलिंडा मानती हैं कि शुरुआत में वे स्वयं के लिए समय निकालने को बेकार का विचार मानती थीं। उनका सारा समय तीनों बच्चों की देखभाल में बीत जाता था। बच्चों को स्कूल भेजने के बाद या उनके सोने के समय उन्हें यह अहसास हुआ कि यदि वह खुद को आराम नहीं देंगी तो मानसिक रूप से थक जाएंगी।

यह दरअसल उनके लिए आत्मसाक्षात्कार का समय था। इस समय उन्होंने समझा कि खुद के लिए समय निकालना स्वार्थ नहीं है। वह खुद अंदर से शांत होंगी, तभी परिवार और समाज को अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे पाएंगी। तुरंत व्यस्तता की ओर न भागें। जब जीवन में अचानक बड़ा परिवर्तन या दुख आए, तो खुद को किसी काम में झोंकने के बदले थोड़ा ठहरें। बीते लम्हों को महसूस करें और नई उत्पन्न स्थिति से सीखने का समय दें। हर काम में संपूर्णता की जिद छोड़ दें। जब आप परोपकार, मातृत्व, लेखन और बिजनेस एक साथ कई जिम्मेदारियां संभाल रहे हों, तो सब कुछ बिलकुल सही नहीं हो सकता। इसलिए इसका दबाव हटा दें और हर छोटी बात को नियंत्रित करने की आदत से बचें। अचानक आए बदलाव आपकी पहले से बनी योजनाओं और पहचान को ध्वस्त कर सकते हैं, लेकिन इस खालीपन में खुद के साथ बिताए गए कुछ शांत पल ही जीवन का वास्तविक सार हैं। असहजता को स्वीकारें। मानसिक विकास अक्सर असहज स्थितियों में ही होता है। इससे घबराने की जगह इसे अपनाएं।

साल में 3 फ्री सिलेंडर, ट्रांसजेंडर के लिए फ्री में बस यात्रा, महिलाओं की मुफ्त सेवा का दायरा बढ़ा

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु सरकार की ओर से लगातार फ्रीबीज का ऐलान किया जा रहा है। मुफ्त की योजनाओं की कड़ी में कुछ और योजनाएं भी शामिल की गई हैं। राज्य में अब आर्थिक रूप से कमजोर परिवार को हर साल 3 मुफ्त LPG सिलेंडर दिए जाएंगे। ट्रांसजेंडर लोगों के लिए मुफ्त यात्रा की योजना का ऐलान किया गया है, साथ ही महिलाओं की बसों में मुफ्त यात्रा करने के दायरे को बढ़ाते हुए एक्सप्रेस और डीलक्स सेवाओं के लिए कर दिया है।

मुख्यमंत्री जोसेफ विजय ने आज सोमवार को विधानसभा में कई नई मुफ्त योजनाओं की घोषणा करते हुए, सालाना 2.15 लाख रुपये से कम आय वाले हर परिवार के लिए साल में 3 मुफ्त LPG सिलेंडर देने का ऐलान किया। साथ ही अगले साल पोंगल से 'अन्नपूर्णी सुपर सिक्स' योजना शुरू की जाएगी और इससे करीब 1.130 करोड़ परिवारों को फायदा होने की उम्मीद है।

फ्री सिलेंडर स्कीम से 4 हजार करोड़ का बोझ

इस योजना के तहत, पात्र लाभार्थियों की ओर से खरीदे गए 3 LPG सिलेंडरों की कीमत सीधे उनके बैंक खातों में जमा की जाएगी। इस योजना से राज्य के खजाने पर हर साल करीब 4,000 करोड़ रुपये का खर्च आने का अनुमान है। योजना का ऐलान करते हुए सीएम विजय ने कहा कि खाड़ी क्षेत्र में चल रहे युद्ध की वजह से कुकिंग गैस सिलेंडरों की कमी और सिलेंडरों की बढ़ती कीमतों ने परिवारों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डाल दिया है। उन्होंने विधानसभा में कहा, "संकटपूर्ण स्थिति को ध्यान में रखते हुए, आर्थिक तंगी के बावजूद, जनता पर वित्तीय बोझ कम करने, उनके कल्याण की रक्षा करने और लोगों से किए गए वादे को पूरा करने के लिए प्रदेश सरकार ने उन्हें कुकिंग गैस सिलेंडरों पर खर्च होने वाली राशि देने का फैसला किया है।" चुनाव से पहले विजय की पार्टी 'तमिलगा वेट्री कझगम' ने साल में 6 मुफ्त LPG सिलेंडर देने का वादा किया था।

ट्रांसजेंडर्स के लिए मुफ्त यात्रा का ऐलान

मुख्यमंत्री विजय ने साथ ही ट्रांसजेंडर लोगों के लिए फ्री में बस यात्रा की सुविधा भी घोषणा की और महिलाओं के लिए 'वेट्री पयाना थिट्टम' योजना का दायरा भी बढ़ा दिया। बढ़ाई गई इस योजना के तहत, महिलाओं को न केवल साधारण बसों में बल्कि एक्सप्रेस, LSS और डीलक्स सेवाओं में भी फ्री में यात्रा करने की अनुमति होगी। यह सुविधा अंतर-जिला बस सेवाओं तक भी बढ़ाई जाएगी। विजय ने कहा, "महिलाओं की यात्रा की आजादी उनकी आर्थिक स्वतंत्रता और उनके परिवारों की प्रगति का आधार है।" मौजूदा मुफ्त यात्रा योजना के तहत, महिलाओं को मेट्रोपॉलिटन और शहरी इलाकों में साधारण और पहाड़ी रूट वाली बसों में सिर्फ 40 किमी तक यात्रा करने की अनुमति थी, जबकि एक्सप्रेस, LSS, डीलक्स और उपनगरीय सेवाओं में मुफ्त यात्रा की सुविधा नहीं थी। हालांकि, नई योजना के अनुसार, महिलाएं मेट्रोपॉलिटन और शहरी इलाकों में चलने वाली एक्सप्रेस, LSS और डीलक्स सरकारी बसों के साथ-साथ उपनगरीय (Mofussil) और पहाड़ी इलाकों में सामान्य किराए वाली बसों में भी मुफ्त यात्रा कर सकती हैं।

फ्री बस सेवा से 6,000 करोड़ का खर्चा

सामाजिक न्याय के सिद्धांत की बात करते हुए सीएम विजय ने कहा, "इस सरकार का मुख्य लक्ष्य सामाजिक न्याय का सिद्धांत है, जिसके तहत तमिलनाडु के किसी भी हिस्से में रहने वाली किसी भी महिला को ट्रांसपोर्ट के खर्च की वजह से अवसरों से वंचित नहीं होना चाहिए।" उन्होंने आगे कहा कि महिलाओं के कल्याण को ध्यान में रखते हुए, सरकार ने महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा योजना का बड़े पैमाने पर विस्तार करने का फैसला किया है। इसे 'वेट्री पयनम' (विजयी यात्रा) नाम दिया गया है और यह योजना 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की जयंती से लागू होगी।

जज को 'तमीज नहीं है' बोलने वालीं आईएएस दुर्गा शक्ति नागपाल पर चलेगा मुकदमा! हाई कोर्ट ने माना न्यायपालिका पर हमला

नई दिल्ली, एजेंसी। गोंडा के करीब तीन दशक पुराने भूमि विवाद में न्यायिक प्रक्रिया को कथित तौर पर प्रभावित करने के आरोप ने उत्तर प्रदेश की वरिष्ठ आईएएस अधिकारी और देवीपाटन मंडल की आयुक्त दुर्गा शक्ति नागपाल को मुश्किल में डाल दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने एक सिविल जज को फोन किए जाने के मामले को गंभीरता से लेते हुए इसे न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर सीधा प्रहार माना है। कोर्ट ने मामले को आपराधिक अवमानना के तहत विचार के लिए उचित पीठ के समक्ष भेजने के निर्देश दिए हैं। जानकारी के मुताबिक मामला गोंडा में साल 1997 से लंबित ज्योति विद्या मंदिर स्कूल बनाम नगर पालिका परिषद गोंडा से जुड़े भूमि विवाद का है। इस मामले की सुनवाई सिविल जज (सीनियर डिवीजन) शबीना खान कर रही थीं। आरोप है कि 15 जुलाई 2026 को मंडलायुक्त दुर्गा शक्ति नागपाल ने उन्हें फोन किया था। सिविल जज शबीना खान ने बाद में 4 अगस्त को गोंडा के जिला जज को पत्र लिखकर बातचीत की जानकारी दी। जज के मुताबिक, बातचीत में उनके अवकाश और अदालत में लंबित मुकदमे का जिक्र हुआ। उन्होंने आरोप लगाया कि फोन कॉल के दौरान उन पर अनुचित दबाव बनाने और मामले को प्रभावित करने का प्रयास किया गया। जज शबीना खान की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार, बातचीत के दौरान उन्हें उनके व्यवहार को लेकर सवाल किए गए और हाईकोर्ट में शिकायत करने की बात भी कही गई। जज ने इसे अपने पद का इस्तेमाल कर दबाव बनाने की कोशिश बताया और मामले को दूसरी अदालत में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया।

'उफ्फ क्या परफॉर्मेंस है', प्रेग्नेंसी की खबरों के बीच करीना कपूर की पहली पोस्ट; इस फिल्म की जमकर की तारीफ

सोशल मीडिया पर करीना कपूर का एक वीडियो सामने आने के बाद लोग कयास लगाने लगे कि एक्ट्रेस अपने तीसरे बच्चे की मां बनने वाली हैं। अब एक्ट्रेस ने इन खबरों के बीच एक खास स्टोरी शेयर की है।

करीना कपूर ने अपने इंस्टाग्राम पर फिल्म माइकल की स्टोरी शेयर की। उन्होंने हॉलीवुड स्टार जाफर जैक्सन की फिल्म 'माइकल' में उनकी परफॉर्मेंस की जमकर तारीफ की है। करीना ने फिल्म को देखने लायक बताया और अपनी तारीफ को एक छोटे से लेकिन दमदार शब्द 'उफ्फ' के साथ जाहिर किया।

करीना ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर टीवी स्क्रीन की एक तस्वीर शेयर की, जिस पर 'Michael' फिल्म चल रही थी। इसके साथ उन्होंने कैप्शन में लिखा, 'उफ्फ क्या फिल्म है... क्या परफॉर्मेंस है।'

फिल्म 'माइकल' के बारे में

बता दें कि फिल्म 'माइकल' 24 अप्रैल 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। फिल्म में जाफर जैक्सन लीड रोल में नजर आए थे। इस रोल के लिए उन्हें दर्शकों से और क्रिटिक्स से काफी तारीफें मिली थी। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर भी शानदार कमाई की थी। अब करीना ने भी स्टोरी शेयर कर उनके परफॉर्मेंस की तारीफ की है।

कैसे शुरू हुई करीना की प्रेग्नेंसी की चर्चा?

दरअसल, हाल ही में करीना कपूर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था।

वीडियो में वह जिम से निकलकर अपनी कार की तरफ जाती हुई नजर आईं।

इस दौरान उनकी टीम का एक सदस्य उनके सामने छाता लेकर चल रहा था, जिससे पैपराजी को उनका लुक ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था।

वीडियो सामने आने के बाद कुछ सोशल मीडिया यूजर्स ने करीना के लुक को देखकर उनकी प्रेग्नेंसी को लेकर कयास लगाना शुरू कर दिया।

हालांकि, करीना की तरफ से ऐसी किसी खबर की पुष्टि नहीं की गई है।

सनी देओल, संजय दत्त जैकी श्रॉफ एक्टिव, क्यों नहीं चला गोविंदा का करियर?

गोविंदा ने 80s के दशक में अपने करियर की शुरुआत की थी। दो दशक तक वे इंडस्ट्री का हिस्सा रहे और सुपरस्टार बने। लेकिन 2000s के बाद से एक्टर का बुरा दौर शुरू हो गया और अभी भी उनकी वापसी नहीं हो सकी है।

बदलते दौर के साथ जो बदला उसे ही कामियाबी मिली। फिल्म इंडस्ट्री में 80s के दशक के कई ऐसे कलाकार रहे जिन्होंने एक समय इंडस्ट्री पर राज किया और टॉप स्टार्स की लिस्ट में गिने गए। लेकिन बाद में वे फ्लॉप हुए और फिर वापसी की। मगर कुछ कलाकार ऐसे भी रहे जिन्होंने अपने क्राफ्ट में बदलाव किए रोल्स में बदलाव किए और इंडस्ट्री में टिके रहे। सनी देओल को ही ले लीजिए। जिस एक्टर ने एक समय कई सारी ब्लॉकबस्टर फिल्में दीं उसे बाद में फ्लॉप फिल्मों का सामना करना पड़ा। फिर बीच में सनी देओल ने ब्रेक भी लिया। ब्रेक के बाद एक्टर ने एक बार फिर से वापसी की और आज वे बैक टू बैक हिट फिल्में दे रहे हैं।

अगर 80s के और कलाकारों की बात करें तो संजय दत्त और जैकी श्रॉफ भी कभी विलेन के रोल में या भिन्न किरदारों में नजर आते रहते हैं। और सबसे बड़ी खास बात ये है कि डिमांड में रहते हैं। लेकिन उस दौर में करियर शुरू करने वाले एक्टर गोविंदा के बारे में आप ऐसा नहीं कह सकते हैं। 2000 के मिड में ही उन्होंने फिल्मों में काम करना बंद कर दिया। दौर आगे बढ़ गया और गोविंदा उसी दौर के सुपरस्टार बनकर रह गए। वे उस स्टारडम की चकाचौंध में कहीं गुम हो गए। उन्होंने हालिया इंटरव्यू में ये भी कहा कि वे कामियाबी से थक गए थे। आखिर क्या हुआ गोविंदा के साथ कि उनके दौर के एक्टर आज भी इंडस्ट्री में अपनी जगह बनाए हुए हैं लेकिन गोविंदा अभी भी इंडस्ट्री में खुद को फिट नहीं कर पा रहे हैं।

कॉमेडी नहीं छोड़ पाए/रोल्स के साथ एक्सपेरिमेंट न कर सके

कई सारे 80s के एक्टर्स ऐसे रहे जिन्होंने एक वक्त के बाद साइड रोल्स की ओर अपना रुख किया। यहां वे फिट बैठे और इंडस्ट्री में टिके रहे। कुछ कलाकारों ने लुक्स के साथ एक्सपेरिमेंट किए। संजय दत्त और जैकी श्रॉफ ने कई सारे ऐसे किरदार निभाए जिसमें उनका लुक पहचानना मुश्किल है। वहीं गोविंदा ने कॉमेडी का हाथ ऐसा थामा कि फिर कभी नहीं छोड़ा। वे हर फिल्म में कॉमेडी करते गए और एक वक्त के बाद उनके रोल्स एक से लगने लगे। उन्होंने ना तो अपने लुक्स में कोई खास बदलाव किया ना तो अपने रोल की च्वाइस में।

ट्रांसफोरमेशन पर ध्यान नहीं दिया

कई सारे 80s-90s के स्टार्स ऐसे हैं जिन्होंने अपनी फिटनेस पर लगातार ध्यान दिया है। इन कलाकारों में अनिल कपूर से लेकर संजय दत्त का नाम शामिल है। लेकिन गोविंदा ने अपनी फिजीक पर भी ध्यान नहीं दिया और खुद को ट्रॉन्सफॉर्म करने का भी नहीं सोचा। जबकी करियर की शुरुआत में वे एक बेजोड़ एक्शन सुपरस्टार थे। लेकिन वक्त पर उन्होंने ट्रॉन्सफॉर्मेशन पर ध्यान नहीं दिया जिसका सीधा असर उनकी स्क्रीन प्रेजेंस पर पड़ा।

बॉलीवुड छोड़ राजनीति में जाना पड़ा भारी

करियर की पीक पर कई कलाकारों ने इंडस्ट्री छोड़ राजनीति की ओर रुख किया और ये उन्हें महंगा पड़ा। राजेश खन्ना और अमिताभ बच्चन जैसे कलाकारों का नाम इसमें शामिल किया जा सकता है। साथ ही गोविंदा ने भी ऐसा ही किया। साल 2004 में जब उनकी फिल्में ठीक कर ले जा रही थीं उस दौरान उन्होंने राजनीति में छलांग लगाई और कांग्रेस पार्टी ज्वाइन कर ली। हालांकि बाद में एक्टर ने खुद माना कि ये उनकी गलती थी और उन्हें पॉलिटिक्स में नहीं जाना चाहिए था।

हीरोपंती नहीं छोड़ी

80s से अनिल कपूर, जैकी श्रॉफ, संजय दत्त समेत कई ऐसे कलाकार थे जिन्होंने लीड रोल में खुद को फिट ना पाकर साइड रोल्स करने शुरू किए और इंडस्ट्री में लंबे वक्त तक टिके रहे। लेकिन गोविंदा अपने स्टारडम के जोन में ही रहे और उन्होंने फिल्मों में साइड रोल्स की ओर अपना रुख नहीं किया। इसका भी खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ा।

बदलते दौर के साथ नहीं बदले

कुल मिलाकर 80s और 90s के कई सारे कलाकार ऐसे थे जिन्होंने बदलते वक्त के साथ खुद को हर तरह से इवॉल्व करने की कोशिश की। लेकिन इन सभी चीजों पर गोविंदा ने कभी गंभीरता से ध्यान नहीं दिया और कुछ सालों के बाद वे लाइमलाइट से दूर होते चले गए। इसके बाद जब भी उन्होंने वापसी करनी चाही बॉक्स ऑफिस पर उन्हें मुंह की खानी पड़ी। वहीं अब एक्टर को इंडस्ट्री में खुद को फिट बैठाने के लिए भी जद्दोजहत करनी पड़ रही है। हालांकि उन्होंने कुछ मौकों पर कहा है कि वे कुछ नए प्रोजेक्ट्स के साथ आ रहे हैं। अब देखने वाली बात होगी कि फैंस उन्हें कैसे एक्सेप्ट करते हैं।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा।
RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com